www.thearyasamaj.org

जनवरी-२०१७ ◆ वर्ष ५ ◆ अंक ०८ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जनवरी-२०१७

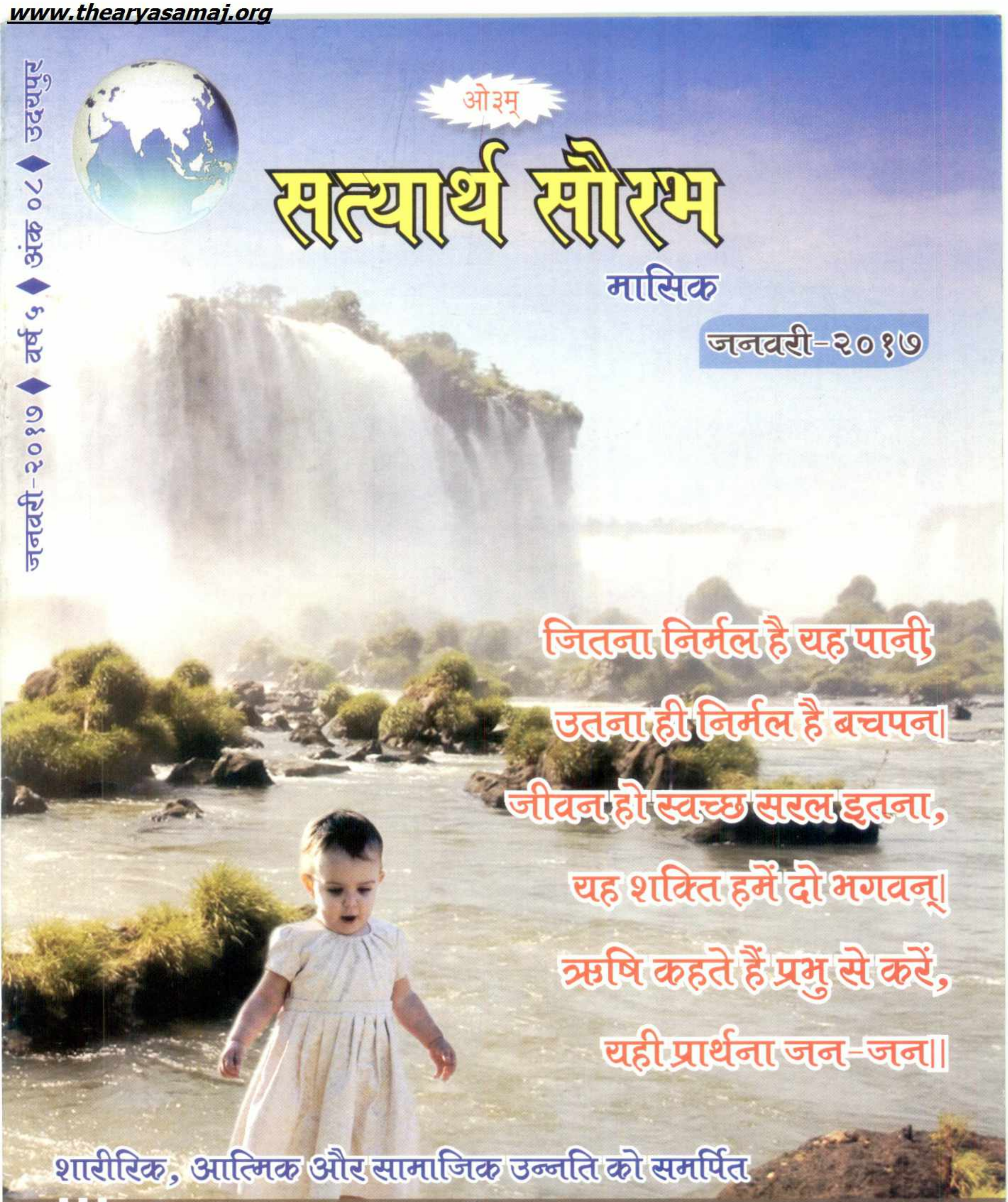

जितना निर्मल है यह पानी,
उतना ही निर्मल है बचपन।
जीवन हो स्वच्छ सरल इतना,
यह शक्ति हमें दो भगवन्।
ऋषि कहते हैं प्रभु से करें,
यही प्रार्थना जन-जन॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ६१

www.thearyasamaj.org

सब्ज़ी में आये स्वाद, मसाले पड़ें कम ! एम.डी.एच. मसालों में है, इतना दम !

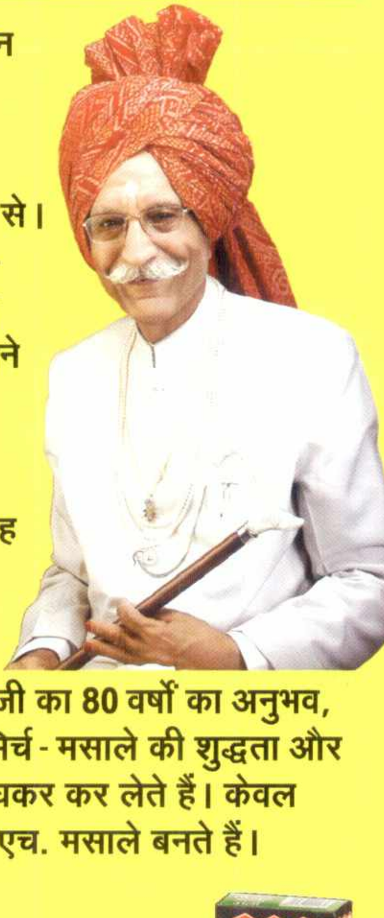

जब आप स्वादिष्ट सब्जियों का आनन्द उठाते हैं तो जान लीजिये कि सब्ज़ी का अपना कोई स्वाद नहीं होता, स्वाद आता है मसालों से।

सब्जी सस्ती हो या महंगी उसका स्वाद बनता है मसाले से। सब्जी बनाने में जितनी भी चीज़ें इस्तेमाल होती हैं जैसे - सब्जी, घी - तेल, मसाले, गैस आदि, उनमें सबसे सस्ता सिर्फ मसाला ही होता है जो कि सब्जी के स्वाद को बनाने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

एम.डी.एच. मसाले प्राकृतिक रूप से शुद्ध एवं उत्तम क्वॉलिटी के साबुत मसालों से तैयार होते हैं, इसलिए यह दूसरों के मसालों के मुकाबले में कम पड़ते हैं।

एम.डी.एच. मसालों की श्रेष्ठ क्वॉलिटी और शुद्धता का रहस्य महाशियाँ दी हट्टी के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी का 80 वर्षों का अनुभव, लगन, मेहनत और मसालों की परख है। वह किसी भी मिर्च - मसाले की शुद्धता और गुणवत्ता का अनुमान उसे जरा सा हाथ में लेकर और सूंघकर कर लेते हैं। केवल बेहतरीन चुने हुए साबुत मसालों के मिश्रण से ही एम.डी.एच. मसाले बनते हैं।

MDH

मसाले

असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००८१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११७
पौष शुक्ल नवमी
विक्रम संवत्
२०७३
दयानन्दाब्द
१९२

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

January - 2016

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स मा चा र २७

०४	वेद सुधा
०५	बस एक सदस्य
११	शान्ति और क्रान्ति
१२	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/१७
१७	नववर्ष में नवीनता क्या?
१६	Manusmriti
२६	स्वास्थ्य- करें तनाव का विश्लेषण
२२	हनुमान वेद के विद्वान् थे
२६	कथा सरित- संघर्ष के बीज
३०	व्यसन-रहित हो राष्ट्र

ह ल च ल २८

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - ०८

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

वेद सुधा

देवों और असुर

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानां सख्यमुप सेदिमा वयंदेवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे।। -ऋ.१/८९/२; यजुः २५/१५

ऋषिः - गोतमो राहूगणपुत्रः।। देवता- विश्वेदेवाः।। छन्दः - जगती।।

विनय - संसार दो प्रकार का कहा जा सकता है- एक देवों का संसार, दूसरा असुरों का संसार। देवों की मुख्य पहचान यह है कि ये ऋजुगामी होते हैं। इनका गमन, इनका व्यवहार सरल, सीधा और सच्चा होता है। इसके विपरीत असुर वे लोग होते हैं जिनका व्यवहार कुटिल, टेढ़ा और असत्यमय होता है। हमें ऋजुता प्रिय है, अतः हम देवों के संसार में रहना चाहते हैं। अपने चारों ओर ऊपर-नीचे , अन्दर-बाहर, हमें देव-ही-देव दिखाई देते हैं। अपने सत्य नियमों के अनुसार चलने वाले, अपने सत्य-धर्मों से कभी न डिगने वाले ये सूर्य, पृथिवी, अग्नि, वायु, जल, आदि बाहर के देव हैं, सत्यनिष्ठ, सत्यज्ञानी मनुष्य भी देव हैं, अन्दर प्राण-मन-बुद्धि इन्द्रियाँ, सब देव हैं। चूँकि हमें ऋजुता प्रिय है, अतः इन देवों के बीच में रहने वाले हम चाहते हैं कि ऋजुता चाहने वाले इन देवों की कल्याणमति हम पर सदा रहे- इनसे हमें सदा सच्ची ज्ञानप्रेरणा मिलती रहे। ये देव जो हमें सदा रक्षा, शान्ति, तेज, स्वास्थ्य, शक्ति, अन्न, पान, नाना प्रकार के सुखों का दान कर रहे हैं, ये शुभ दान हम ऋजुगामियों पर सदा बरसते रहें। हमारा इन देवों से सख्य-सम्बन्ध स्थापित हो जाए, हम इन देवों के साथी हो जाएँ। बल्कि अपने अन्दर देवों को बसाकर, पूरे ऋजु होकर हम ही देव बन जाएँ और जब हमारे अन्दर देव बस जाएँगे, हमारे सब कार्य ठीक-ठीक सत्य नियमों से हुआ करेंगे तो इन देवों के द्वारा हम पूर्ण आयु तक जीवन को भी प्राप्त करेंगे और यह जीवन सच्चा जीवन होगा।

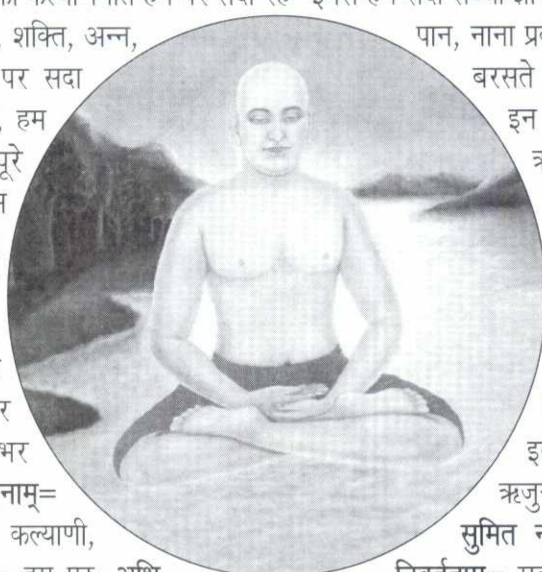

आओ, हम सब इस भूमि पर रहते हुए ही देवों के संसार के वासी हो जाएँ, दिव्य-सुमति और दिव्य-दान पाते हुए देव बनकर देवों की भाँति परिपूर्ण आयु-भर इस भूमि पर बसें।

शब्दार्थ - **ऋजूयतां देवानाम्**= ऋजुगामी या ऋजु लोगों को चाहने वाले देवों की, **भद्रा सुमितिः**= कल्याणी, **सुमित नः**= हम पर बनी रहे, **देवानां रातिः**= ऐसे देवों का दान, **नः**= हम पर, **अभि निवर्तताम्**= सब ओर से निरन्तर बरसता रहे। **वयंदेवानाम्**= हम इन देवों की, **सख्यं उपसेदिम**= मैत्री प्राप्त करें, इनकी **सख्यता**= समानता में बैठें, **देवाः**= ये देव, **जीवसे**= जीवित जीवन के लिए, **नः आयुः**= हमारी आयु को, **प्रतिरन्तु**= बढ़ावें।

❑❑❑

साभार- वैदिक विनय

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

ईश्वर की कृपा से ही सुअवसर प्राप्त होता है। इतने दिनों से उदयपुर में भ्रमण/सम्पर्क होने पर भी यहाँ नहीं आ पाना दुर्भाग्य ही था। आज अनायास आने एवं इस महल/प्रदर्शनी को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपने मित्रों से भी आग्रह करूँगा कि वे भी इस प्रदर्शनी को देख अपनी विरासत के विषय में जानें। प्रशंसनीय प्रयास है।

- शैलेश के पटेल, वडोदरा (गुजरात)

आज आर्य समाज, डबरा, जिला ग्वालियर (मध्यप्रदेश) के छः साथियों (आर्यों) के साथ नवलखा महल को देखा। अति आनन्द एवं गौरव का अनुभव हुआ। महर्षि के इस स्मारक को बनवाकर सभी आर्यों सहित भारतीय संस्कृति पर बड़ा उपकार किया। बहुत धन्यवाद।

- ओमप्रकाश भदोरिया, मध्यप्रदेश आर्य प्रान्तीय सभा, अन्तरंग सदस्य

यह एक अच्छा अनुभव था मेरे लिये आर्यसमाज को जानने का और मुझे आर्य समाज में एक बात अच्छी लगी। मूर्ति पूजा नहीं करना।

- कमल कुमार, जौनपुर

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थ सौरभ की पाँचवी वर्षगाँठ पर विशेष निवेदन

आत्म निवेदन

बस एक सदस्य

Subscribe Satyarth Saurabh

इंजीनियरिंग में पढ़ने वाले एक विद्यार्थी ने पटना लोकसेवा आयोग को एक आवेदन पत्र भेजा। उसकी रसीद न मिलने पर उसने पोस्ट आफिस के चक्कर काटे तो पता चला कि विभाग की गलती से उसका पत्र लखनऊ विश्वविद्यालय को भेज दिया है। विद्यार्थी के पास केवल ४८ घंटे बचे थे उसने केन्द्रीय डाक मंत्री को ट्विटर पर तथ्य भेजे नतीजा त्वरित कार्यवाही और आवेदन सही स्थान पर समय- पूर्व पहुँच गया। एक और घटना - ६० वर्ष की एक बूढ़ी महिला अपने किसान विकास पत्र की रकम पाने के लिए पोस्ट आफिस के चक्कर काटती रही। अचानक एक दिन हाथों में गूलदस्ते तथा किसान विकास पत्र की रकम लिए एक विभागीय अधिकारी महिला के घर उपस्थित हुआ। ये दोनों घटनाएँ 'टाइम्स आफ इंडिया', में छपी कतिपय भाग्यशाली लोगों की थीं ,परन्तु मैगजीन का व्यवस्थापक इतना भाग्यशाली नहीं होता। पत्रिकाएँ ज्यादा से ज्यादा स्वाध्यायशील पाठकों के हाथों में पहुँचें इसलिए डाक-खर्च में छूट के लिए एक लम्बी प्रक्रिया के उपरान्त उनको पंजीकृत कराया जाता है , परन्तु उसका लाभ तब है जब पत्रिका ठीक समय पर पाठक के हाथ में पहुँच जायं। परन्तु ऐसा हो जाय तो पत्रिका के सम्पादक और प्रबंधक मंडल को अपने को भाग्यशाली समझना चाहिए। आपकी प्रिय पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' को प्रारम्भ किये ठीक ५ वर्ष हो गए। इस पत्रिका को प्रत्येक दृष्टि से श्रेष्ठ बनाने की जिद ने हमसे परिश्रम भी खूब कराया है पर उस थकान का तो पाठकों की सकारात्मक प्रतिक्रया से शमन हो जाता है। एक नया जोश और उत्साह आगे कार्य करने को प्रेरित करता रहता है। परन्तु यदि मुझसे पूछा जाय कि पत्रिका चलाने में सबसे बड़ी बाधा क्या आती है तो बिना किसी संकोच के मेरा उत्तर होगा - डाक व्यवस्था। आये दिन उलाहने पाठकों के आते हैं कि दो महीने तक तो हमें पत्रिका मिली परन्तु अब गत २ माह से नहीं मिल रही है। हमारा विनम्र उत्तर यही होता है कि जब दो पत्रिका आपके पास पहुँच गयीं तो इसका तात्पर्य है कि पता तो एकदम ठीक है और यह भी है कि जब आपका नाम पता एक बार हमारी पत्रिका-पाठकों की कंप्यूटर सूची में सम्मिलित हो गया तो अकारण उसे काटने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। हम तो नवीनीकरण शुल्क ठीक समय पर प्राप्त न होने पर भी एकाध वर्ष तक तो पत्रिका भेजते ही रहते हैं परन्तु यह बात अनेक सहृदय पाठकों को सही नहीं लगती। मैं एक उदाहरण यहाँ देना चाहूँगा। गत वर्ष अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलेन आस्ट्रेलिया के अवसर पर कुछ आर्यजन पत्रिका के ग्राहक बने। उनमें देहरादून निवासी हमारे एक मित्र ने भी अनुकम्पा की। कुछ मास बाद उन्होंने तथा उनके एक मित्र ने हमारा ध्यान आकर्षित किया कि उन्हें एक भी अंक प्राप्त नहीं हुआ। हमने सारा रिकार्ड चेक किया तथा उनसे पुनः पता पूछ देखा तो सब कुछ ठीक था। हमने तीन अंक एकसाथ उन्हें और भेज दिए। कुछ अंतराल के पश्चात् उनके मित्र का फोन आया। स्वर में नाराजगी थी कि अभी तक उनको एक भी अंक नहीं मिला। हमने उन्हें बताया कि हम एक साथ तीन अंक भेज चुके हैं। तात्पर्य यह कि दुबारा भेजे तीन अंक भी उन्हें नहीं मिले। अत्यंत हताशा हुयी, शर्मिंदगी भी। क्या किया जाय अब हमने चार माह के अंक उन्हें 'स्पीडपोस्ट' से भेज दिए। ये भी डिलीवर नहीं हुए । जब पुनः अंक नहीं मिलने की सूचना हमें मिली तो हमने तुरंत इंटरनेट से ट्रेक रिकार्ड निकाल उन्हें ई मेल कर दिया जिसमें पत्रिका की डिलीवरी दर्शायी गयी थी। इस सबूत के आधार पर उन्होंने पोस्ट आफिस तथा पोस्टमेन को आड़े हाथों लिया तब डाकिया अपनी गलती स्वीकार कर माफी माँगने लगा। तो स्पष्ट है कि पत्रिका तथा उसके साथ हमारी तथा न्यास की प्रतिष्ठा को डाकिये महोदय ने किस बेदर्दी के साथ कुचला था। **प्रायः न पहुँचने वाली पत्रिकाओं के साथ यही होता है।**

पाठकों से अति विनम्र निवेदन है कि हम पत्रिका पढ़ाने के लिए ही छापते हैं तथा परिश्रम करते हैं अतः हमारे स्तर पर पत्रिका प्रेषित न करना असंभव है। पते हाथ से नहीं कंप्यूटर में फीड हैं अतः एक बार पत्रिका पहुँचने पर पते में गलती की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है अतः एक कृपा करें कि पत्रिका न मिलने की दशा में डाकबाबू से सौहार्दपूर्ण वार्तालाप करें। फिर भी पत्रिका नहीं मिलती है तो यहाँ से तो पुनः भेज ही दी जायेगी।

वैसे कृपालु पाठकों की सूचनार्थ गत पाँच वर्षों में ऐसा एक बार भी नहीं हुआ कि सत्यार्थ-सौरभ का अंक मास की ७ तारीख को प्रेषित न किया गया हो।

प्रिय पाठकगण अब हम आपकी सेवा में एक विनम्र निवेदन करने चले हैं। आपने सत्यार्थ-सौरभ को खूब प्यार दिया। इसके गेट-अप की, साज-सज्जा की ही नहीं इसके लेखों की भी भूरिशः प्रशंसा आपने की है। हमें प्रसन्नता की अनुभूति होना स्वाभाविक ही है। परन्तु प्रशंसा के अनुपात में सदस्य संख्या में वृद्धि नहीं हुयी है। क्योकि मार्केटिंग की विधा से हम अपरिचित ही हैं। हमने देखा है कि हम यदि किसी कार्यक्रम में जाते हैं तो लोगों से मिलना-जुलना होता है तब अवश्य ग्राहक बनते हैं, परन्तु हमारा बाहर जाना संभव नहीं हो पाता है न ही न्यास से जुड़े ऐसे विद्वद्जन हैं जो सदस्यता संख्या बढाने का प्रयास करें अतः एक अच्छी पत्रिका ज्यादा से ज्यादा पाठकों तक पहुंचे इस उद्देश्य से आज पाँच वर्ष पश्चात् , साठ अंक नियमितता के साथ पाठकों को देने के पश्चात्, पहली बार आपसे व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि **केवल एक नवीन सदस्य सत्यार्थ-सौरभ का बनाने की कृपा करें।** आपका यह सहयोग पत्रिका को नए आयाम प्रदान करेगा। आशा है आप निराश नहीं करेंगे। एक सदस्य बनाना वह भी सत्यार्थ सौरभ जैसी पत्रिका का, कोई कठिन काम नहीं है। बस आपको हमारी प्रार्थना पर थोडा ध्यान देना है।

एक और विनती है कि जो भाई-बहिन सत्यार्थ-सौरभ के वार्षिक सदस्य हैं वे आजीवन सदस्यता ग्रहण करें , कारण कि सदस्यता नवीनीकरण का पूर्ण मानस होते हुए केवल आलस्यवश नवीनीकरण राशि जमा कराने में व्यवधान भी आ जाता है। अतः आजीवन सदस्यता ग्रहण करने हेतु प्रार्थना है ताकि हमारे और आपके बीच में एक अंक की भी दूरी न हो सके। फिर आज के युग में आजीवन सदस्यता के रुपये १००० मात्र भी कोई अधिक नहीं हैं, अस्तु।

अब दो शब्द नवलखा महल और इसकी गतिविधियों के सम्बन्ध में भी। यह तो आप सभी भली भाँति जानते हैं कि यह पवित्र स्थल आर्यों का एक ऐसा श्रद्धा स्थल है जहाँ महर्षि दयानन्द ने अपने अनुपम ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रामाणिक संस्करण का प्रणयन सम्पूर्ण किया था। इसे न्यास द्वारा अहर्निश प्रयास कर एक दर्शनीय स्मारक का रूप दिया गया है तथा आर्य जगत् में यह एक अकेला ऐसा स्थल बन चुका है जहाँ वर्ष में सद्यः ३०-३५ सहस्र दर्शक सहज रूप से आते हैं तथा यहाँ आकर यहाँ के प्रकल्पों का अवलोकन कर स्वर्णिम वैदिक संस्कृति का परिचय विभिन्न विधाओं के माध्यम से पाते हैं, **जिनका विस्तृत विवरण इस अंक में दिया जा रहा है।** इस सबको प्रचारित करने की अत्यंत आवश्यकता है। इसमें आपके परम सहयोग की आवश्यकता है। अपने जानकार क्षेत्र में कृपया ऋषिवर की इस तपोस्थली के बारे में जानकारी दें। यह अभी भी दर्शनीय है , न्यास इसे और सुन्दर रूप देने को समुत्सुक है, इसमें भी आप सब ऋषि भक्तों के सहयोग की अपेक्षा है।

यह कुछ निवेदन आपके समक्ष रखा है आशा है आप सब अवश्य ध्यान देंगे।

इसी आशा और विश्वास के साथ।

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

❑❑❑

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल

अध्यक्ष - न्यास

सत्कर्मों से सुख मिलता,
है, संघर्ष से पहचान।
प्रेम, दया और परोपकार,
से पूरे होते सब अरमान।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

www.thearyasamaj.org

अध्यक्षीय अनुरोध

सम्मान्य भाईयो और बहिनो,

मेरी अपनी मान्यता है कि महर्षि दयानन्द के जीवन से सम्बद्ध जितने भी पवित्र स्थल हैं, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल को उनमें विशेष स्थान प्राप्त है, कारण यहाँ महर्षि देशी राजाओं के माध्यम से जन-जन में वैदिक सद्धर्म व स्वभाषा, स्वसंस्कृति तथा स्वराष्ट्र भावना को प्रसारित करने के विशिष्ट उद्देश्य से लगभग साढ़े छः मास विराजे थे। इस अवधि में यहाँ का वातावरण आपकी ओजस्वी व सम्मोहक वाणी से तरंगित होता रहा। यहाँ की माटी का एक-एक कण ऋषिवर की पवित्र चरण रज को अपने में समाहित किए हुए है। मानव मात्र के कल्याणार्थ यहाँ पर सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थ का प्रणयन सम्पूर्ण हुआ। यहीं पर श्रीमती परोपकारिणी सभा की स्थापना कर, उसका पंजीकरण कराया गया। अतएव भावनात्मक तथा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में यह आर्य जगत् का शिरोमणि स्मृति स्थल है।

मेरी यह भी मान्यता है कि स्वच्छ पर्यावरण, पर्यटन तथा ऐतिहासिक दृष्टि से उदयपुर नगर के एक गौरवशाली व आकर्षक स्थल होने के कारण, अगर यहाँ महर्षि जी की स्मृति में सुन्दरतम स्मारक विकसित हो तो अधिकाधिक जिज्ञासु जन यहाँ आकर पर्यटन लाभ के साथ-साथ अपने जीवन को एक समुन्नत दिशा में अग्रसर करने हेतु प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे। विशेष रूप से तब जबकि सत्यार्थ प्रकाश भवन नवलखा महल शुद्ध, स्वच्छ व अरोग्यकारी वातावरण के लिए प्रसिद्ध गुलाब बाग के मध्य में स्थित होने से, यहाँ विकसित किए जाने योग्य योग व ध्यान केन्द्र हेतु सर्वोत्तम स्थल प्रतीत होता है। अभी गत दो वर्षों से महल के दर्शनार्थ अत्यल्प मूल्य का टिकट लेकर भी ३०००० से ज्यादा पर्यटक प्रतिवर्ष आ रहे हैं तथा यहाँ की 'आर्यावर्त्त' चित्रदीर्घा, सत्यार्थप्रकाश स्तम्भ तथा मल्टीमीडिया सेन्टर का अवलोकन कर इस स्मारक की भूरिशः प्रशंसा करते हैं। लाखों रुपये का वैदिक साहित्य यहाँ से बिक रहा है।

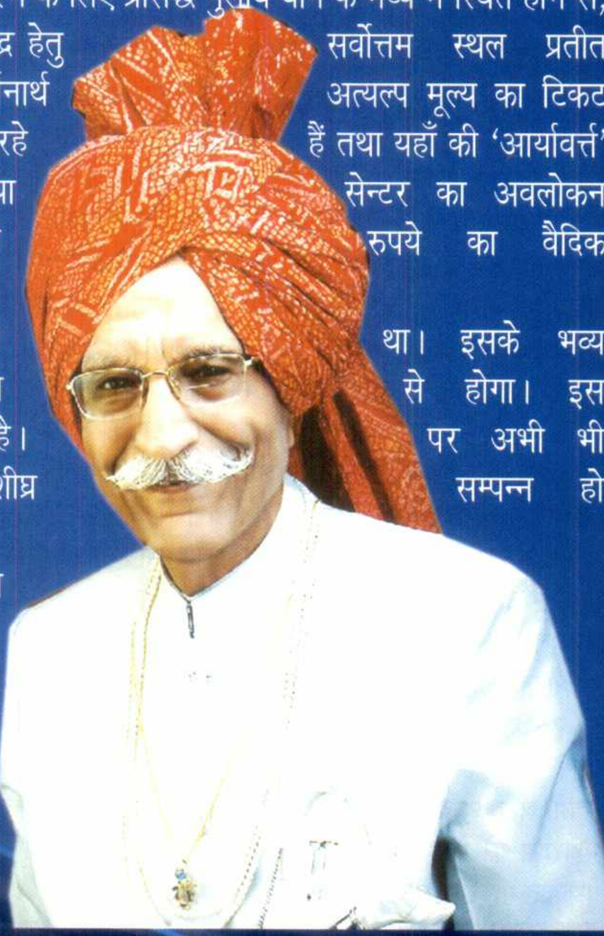

यह भवन अधिग्रहण के समय बिल्कुल जीर्णशीर्ण था। इसके भव्य स्वरूप का परिचय आपको इस पुस्तिका के माध्यम से होगा। इस भवन को दो करोड़ से भी अधिक में सँवारा गया है। पर अभी भी बहुत कार्य होना शेष है। वह भी प्रभु कृपा से शीघ्र सम्पन्न हो जाएगा।

आयें हम जीवन व्रत लें, मानस बनावें, सहयोग प्रारम्भ करें ताकि माँ वसुन्धरा की गोद को गौरवान्वित करने वाले सम्पूर्ण मानवता के हितैषी उस विषपायी देवता महर्षि दयानन्द की स्मृति में इस केन्द्र को इतना दर्शनीय और सशक्त बनावें कि एक बार पुनः यहाँ से विश्व वैदिक संस्कृति का पाठ पढ़ सके।

महाशय धर्मपाल

न्यास अध्यक्ष

सत्यार्थ प्रकाश भवन नवलखा महल-एक परिचय

१६ वीं सदी में अज्ञान व अंधकार में भटक रहे भारतीयों में नव संचेतना प्रवाहित करने वाले, विश्व मानवता के हितार्थ अपना सर्वस्व समर्पित कर देने वाले, वेदशास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान् व परमयोगी महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व व कृतित्व की स्मृति को अपने अन्तःस्थल में छिपाए यह पावन पवित्र नवलखा महल, झीलों की नगरी के नाम से विख्यात् उदयपुर की सुरम्य वादियों में स्थित गुलाब बाग (सज्जन निवास बाग) में स्थित है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १० अगस्त १८८२ को महाराणा सज्जन सिंह जी के निमंत्रण पर उदयपुर पधार कर लगभग साढ़े छः माह यहीं निवास किया था।

राजस्थान में महर्षि जी का यह प्रवास एक निश्चित उद्देश्य को लेकर हो रहा था। उनकी धारणा थी कि यदि एक राजा सुधर जाए तो वह अपनी सारी प्रजा को सुधार सकता है। उनकी धारणा थी कि यद्यपि सारा भारत सम्प्रति विदेशी शासकों के अधीन था किन्तु राजपूताना तथा अन्य प्रान्तों के क्षत्रिय नरेशों में स्वधर्म तथा स्वसंस्कृति के प्रति आस्था का भाव अभी भी कम नहीं है। यदि इन देशी राजाओं में स्वाभिमान के भावों को जागृत किया जाए तथा उनमें प्रजापालन, धर्मरक्षा तथा स्वदेशानुराग को उत्तरोत्तर बढ़ाया जाय तो देश के सार्वत्रिक उत्थान में इनकी भूमिका निर्णायक सिद्ध हो सकती है। ऐसे ही विचारों ने स्वामी जी को छः माह से कुछ अधिक काल तक उदयपुर में रहने और महाराणा को स्वदेशोन्नति हेतु प्रेरित करने के लिए कृतसंकल्प बनाया था। अपने प्रवास में महाराज श्री ने महाराणा जी को शिष्य के रूप में स्वीकार कर उन्हें वैदिक सद्धर्म का पाठ पढ़ाया।

स्वामी दयानन्द राजाओं को अपनी दिनचर्या में सुधार करने तथा स्वजीवन को जनहित के कार्यों में अधिकाधिक समर्पित करने के लिए प्रेरित करते थे। तद्नुकूल उन्होंने एक पत्र लिखकर महाराणा के लिए आचरणीय एक आदर्श दिनचर्या निश्चित की। इसमें उषाकाल से पूर्व शैय्यात्याग, शौचादि से निवृत्त होकर पैदल अथवा अश्वारुढ़ होकर भ्रमण, राजमहल लौटकर नैत्यिक यज्ञ, पुनः राजकार्य, तत्पश्चात् भोजन एवं विश्राम, सायंकाल तक न्यायकार्य, पुनः नगर निरीक्षण, सायंकालीन उपासना, मनोरंजन के पश्चात् शैय्यारुढ़ होने तक की व्यवस्थाएँ थीं।

श्रीमहाराज ने अपने सदुपदेशों से उदयपुर की जनता को बहुत प्रभावित किया। महर्षि जी के सान्निध्य में महाराणा सज्जनसिंह जी के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आया। उन्हीं की सद्प्रेरणा से मेवाड़ के तत्कालीन समाज व शासन में अत्यधिक सुधार हुए। प्रायः सभी शाक्त उपासना स्थलों में नवरात्र तथा दशहरे के अवसर पर देवी के समक्ष बकरों, भैंसों आदि की बलि चढ़ाई जाती थी। उदयपुर में भी ऐसी क्रूर प्रथा वर्षों से चली आ रही थी। मूक और निर्दोष पशुओं की इस निर्मम हत्या को देखकर करुणा वरुणालय दयानन्द का हृदय अत्यन्त दुःखी हुआ। एक दिन जब महाराणा अपनी राज्यसभा में सभापति के आसन पर विराजमान थे तो स्वामी दयानन्द ने उनके समक्ष खड़े होकर स्वयं को बलि के नाम पर मारे जाने वाले पशुओं के वकील के रूप में प्रस्तुत किया और उनसे अनुरोध किया कि देवी-देवताओं के नाम पर पशुओं के इस क्रूर वध को वे बन्द करें। महाराणा स्वामी जी के इस कथन के औचित्य को मान तो गए किन्तु उन्होंने विनम्रतापूर्वक कहा कि शताब्दियों से प्रचलित इस बर्बर प्रथा को एक बार ही समाप्त नहीं किया जा सकता तथापि उनका प्रयत्न होगा कि धीरे-धीरे जनमत को शिक्षित कर वे इसे बन्द कर देंगे।

स्वामी जी वृहद् यज्ञों को पर्यावरण सुधार, प्रदूषण उन्मूलन तथा जलवायु को स्वच्छ करने के लिए आवश्यक मानते थे। उन्होंने महाराणा को प्रेरणा देकर नीलकण्ठ महादेव मंदिर के निकटवर्ती एक स्थान में एक ऐसा ही वृहद् हवन करवाया। इसकी पूर्णाहुति महाराणा के द्वारा सम्पन्न हुई।

www.thearyasamaj.org

स्वामी जी का यह प्रबल प्रयास रहता था कि राजा लोग अपने शासन कार्य को सुव्यवस्थित करें तथा न्याययुक्त होकर त्यागपूर्वक प्रजाहित में लगें। राजकार्यों में हिन्दी और संस्कृत को अधिकाधिक प्रविष्ट कराना भी उनका एक लक्ष्य था। जब मेवाड़ राज्य का राजपत्र (गजट) प्रकाशित होने लगा तो श्री महाराज (स्वामीजी) के परामर्शानुसार इसे 'सज्जनकीर्ति सुधाकर' नाम दिया गया। राज्य की सर्वोच्च शासन परिषद् को 'महद्राजसभा' नाम से पुकारा जाने लगा। अन्य विभागों के नाम भी इसी प्रकार रखे गए।

श्री महाराज ने मेवाड़ में आयुर्वेद पद्धति की चिकित्सा को प्रोत्साहन देने के लिए कहा तथा राज्य कर्मचारियों को स्वदेश निर्मित वस्त्रों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। स्वामी दयानन्द गो-रक्षा के आर्थिक पहलू पर सबसे अधिक जोर देते थे। गाय उनके लिए कोई पूजा का पशु न होकर देश की आर्थिक दशा को सुधारने का एक महत्वपूर्ण साधन था। गो-वध बन्द कराने के लिए वे एक करोड़ भारतवासियों के हस्ताक्षरों से युक्त एक अपील भारत साम्राज्ञी विक्टोरिया को भेजना चाहते थे। इसके लिए जो आवेदन पत्र तैयार किया था इस पर महाराणा सज्जनसिंह ने हस्ताक्षर किए थे।

स्वामी जी के परामर्श से मेवाड़ में प्रजाहित के अनेक कार्य आरम्भ किए गए। उन्होंने प्रस्ताव किया कि राज्य के सरदारों के पुत्रों की शिक्षा के लिए एक पाठशाला स्थापित होनी चाहिए जिसमें इन क्षत्रिय पुत्रों को शास्त्र और शस्त्र दोनों की ही शिक्षा दी जा सके। संस्कृत की प्रसिद्ध उक्ति है-

शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचिन्ता प्रवर्तते।

शस्त्रों के द्वारा भली भाँति रक्षित देश में ही सत्यशास्त्रों के पठन-पाठन के लिए अवकाश रहता है। महाराणा ने श्री महाराज का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और पाठशाला भवन का नक्शा भी तैयार किया गया। किन्तु स्वामी जी के विदा हो जाने और कुछ काल पश्चात् मेवाड़ नरेश के रुग्ण हो जाने के कारण इस योजना पर उस समय आगे का कार्य नहीं हो सका। शिक्षा में स्वामी जी की सहज रुचि थी। उदयपुर की राजकीय शालाओं के लिए उन्होंने एक पाठ्यक्रम बनाया जिसे महाराणा के आदेश से क्रियान्वित किया गया।

संस्कृति और भाषा का अटूट सम्बन्ध होता है। स्वामी जी का आर्यभाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार में अपूर्व योगदान रहा है। मेवाड़ की राजभाषा के रूप में न्याय के अभिलेखों में अरबी फारसी शब्दों के स्थान पर संस्कृत के समानार्थक तत्सम शब्दों को प्रयुक्त करने पर उन्होंने जोर दिया। अदालती शब्दावली में आने वाले उर्दू फारसी के शब्दों के स्थान पर समान अर्थ के द्योतक अनेक संस्कृत शब्द उन्होंने स्वयं सुझाये जिन्हें स्वीकार कर लिया गया।

पंडित मोहनलाल वि. पण्ड्या ने एक दिन महाराज से एक अत्यन्त मार्मिक किन्तु महत्वपूर्ण प्रश्न पूछ लिया। उनकी जिज्ञासा थी कि इस भारत के देश की सम्पूर्ण जातीय (राष्ट्रीय) उन्नति कब होगी? प्रश्न की गंभीरता को अनुभव करते हुए स्वामी जी ने उतनी ही तत्परता और मनोनिवेश पूर्वक उत्तर दिया, 'जब तक समस्त देशवासी एक ही धर्म (स्वकर्तव्यरत्) के अनुयायी, एक ही भाषा बोलने वाले तथा एक ही प्रकार के आचार-विचार और व्यवहार को धारण कर एक ही लक्ष्य की पूर्ति हेतु सर्वात्मना कृतनिश्चय नहीं हो जाते, तब तक स्वदेश की एकता और उसकी सर्वांगीण उन्नति स्वप्न मात्र ही रहेगी।' इन उदात्त विचारों को स्वमुख से अभिव्यक्त करने वाले परिव्राट् दयानन्द समस्त आर्यावर्तवासियों को राष्ट्रीय एकता के उस प्रगाढ़ सूत्र में आबद्ध देखना चाहते थे जो तभी संभव है जब भाषा, भाव, विचार, जीवनपद्धति तथा व्यवहार में एकता लाई जा सके। जिसे राष्ट्र की मुख्य राष्ट्रीय धारा कहा जाता है उसकी सिद्धि तथा देश की समग्र एकता तभी संभव है जब धर्म, भाषा, संस्कृति और आचार-व्यवहार में विद्यमान पार्थक्य और अनैक्य को समाप्त कर समस्त देशवासियों में विचारगत् और आचारणगत् एकता को लाया जाय।

अब पण्ड्या जी का दूसरा प्रश्न था, जब आप देशवासियों में वास्तविक एकता देखना चाहते हैं तो मतमतान्तरों के खण्डन में

आपकी रुचि क्यों है? क्या इससे देश में वैमनस्य के भाव नहीं बढ़ेंगे?' स्वामी जी ने अपने उत्तर में कहा कि मिथ्या पाखण्डों, धर्म के नाम पर फैले मिथ्या आचारों तथा अन्धविश्वासों का खण्डन तो सर्वथा उचित ही है, क्योंकि इन मत सम्प्रदायों द्वारा फैलाये गये पारस्परिक विरोध और विद्वेष ने ही राष्ट्रीय एकता को छिन्न-भिन्न किया है। उन्होंने इस बात को स्पष्ट करते हुए कहा कि हिन्दू समाज की अवनति का कारण सम्प्रदायाचार्यों के संकीर्ण विचार तथा उनकी अनुदार मनोवृत्ति ही है। मध्यकाल में उत्पन्न अनेक मतसम्प्रदायों के संकुचित क्रियाकलापों तथा अनुदारतापूर्ण विश्वासों ने तथाकथित निम्न वर्गों के लोगों को स्वधर्म त्यागकर परमत ग्रहण करने के लिए विवश किया। आज इस जीण-शीर्ण हताशा और निराशाग्रस्त समाज को पुनः जीवित और जागृत करने की आवश्यकता है और यह तभी संभव है जब हम में आई कूपमण्डूकता गतानुगति और यथास्थितिवाद से हम अपने को मुक्त करें। अपने कथन के उपसंहार में श्री महाराज ने कहा- ''इसी महत् राष्ट्रीय लक्ष्य की पूर्ति के लिए मैं व्यक्तिगत मानापमान की चिन्ता किए बिना, समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रेरणा तथा उद्बोधन देता हुआ देश में सर्वत्र भ्रमण कर रहा हूँ। मुझे अपने पथ से विचलित करने के लिए अनेक प्रयास हुए हैं। यहाँ तक कि नाना प्रकार की शारीरिक यातनाएँ देकर तथा विष देकर भी मुझे समाप्त करने की चेष्टाएँ की गई हैं। तथापि मैं अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ रहा हूँ यह ईश्वर की महती कृपा ही है।'' स्वामी जी के इन उदात्त और ओजस्वी तथा देशभक्ति के भावों से परिपूर्ण वचनों को सुनकर पण्ड्याजी गद्गद कण्ठ से बोल उठे-''काश आप जैसे दो-चार अन्य धर्माचार्य भी देशोत्थान के इस कार्य में आपका सहयोग करते तो आर्यावर्त्त को अपने पुरातन गौरव को प्राप्त करने में अधिक विलम्ब नहीं होता।''

मौलवी अब्दुल रहमान उदयपुर के न्यायालय में न्यायाधीश थे। स्वामी जी से विभिन्न धार्मिक तथा दार्शनिक प्रश्नों पर उनका विस्तृत वार्तालाप दिनांक ११ सितम्बर १८८२ से आरम्भ होकर दिनांक १७ सितम्बर १८८२ तक होता रहा। इसे 'उदयपुर शास्त्रार्थ' शीर्षक से प्रकाशित भी किया गया है।

मेवाड़ वासियों को अपने उपदेशों से उपकृत कर स्वामी दयानन्द २८ फरवरी १८८३ को उदयपुर से प्रस्थित हुए।

उदयपुर प्रवास के दौरान ही महर्षि दयानन्द ने मानवमात्र के कल्याणार्थ, सत्य अर्थात् परमपिता परमात्मा के ज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए मानव जीवन की आचार संहिता, अपनी सर्वोत्कृष्ट कृति, कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया। स्वामी जी ने यहाँ वेदभाष्य का कुछ अंश भी पूर्ण किया था। इसी कारण यह नवलखा महल इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकन किए जाने योग्य है। इसी प्रवास के मध्य महर्षि जी ने अपनी उत्तराधिकारी 'श्रीमती परोपकारिणी सभा' का भी गठन किया। ऐसा ऐतिहासिक व जन-जन की श्रद्धा का केन्द्र यह नवलखा महल जीर्ण-शीर्ण अवस्था को प्राप्त हो रहा था। इस पवित्र स्थल पर शराब के गोदाम भरे थे। ऋषि भक्तों के लिए यह स्थिति अतीव कष्टकारी थी। महर्षि जी की स्मृति में यहाँ भव्य राष्ट्रीय स्मारक बनाने हेतु यह आवश्यक था कि भवन आर्य समाज को मिले। आर्य समाज उदयपुर के तत्कालीन प्रधान, दानवीर, श्रेष्ठिवर श्री हनुमान प्रसाद चौधरी तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती के प्रयत्नों को सफलता मिली। राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय श्री भैरोंसिंह जी शेखावत ने उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए इसे आर्य जगत् को सन् १९९२ में सुपुर्द कर दिया। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने नवलखा महल के विकास व व्यवस्थाओं के लिए श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास का गठन किया व श्री हनुमान प्रसाद चौधरी को इसका आजीवन अध्यक्ष नियुक्त किया। सभा ने श्री चौधरी को जो जिम्मेदारी सौंपी उसे निभाने के लिए श्री चौधरी ने अपना जीवन ही समर्पित कर दिया। लगभग एक करोड़ रुपये न्यास को देने के साथ ही श्री चौधरी जी संन्यास ग्रहण कर स्वामी तत्वबोध सरस्वती के रूप में इस स्थल को अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक का रूप देने में जुट गए। वर्तमान में आर्य जगत् के भामाशाह, कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) के प्रधानत्व में न्यास उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है।

{टिप्पणी- इस आलेख में आदरणीय डॉ. भवानी लाल भारतीय द्वारा लिखित व न्यास द्वारा प्रकाशित 'ऋषि दयानन्द का उदयपुर (मेवाड़) प्रवास' पुस्तिका के महत्वपूर्ण अंशों को पाठकों के लाभार्थ समाहित करने का प्रयास किया गया है।}

शान्ति और क्रान्ति

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

सामान्य लोक व्यवहार में शान्ति और क्रान्ति ये दोनों शब्द एक-दूसरे के विपरीतार्थक समझे जाते हैं। ऐसा माना जाता है जहाँ क्रान्ति हो वहाँ शान्ति नहीं हो सकती और जहाँ शान्ति हो वहाँ क्रान्ति का क्या काम। लेकिन प्रश्न उठता है कि क्या यही लोक प्रचलित अर्थ सही हैं और ये दोनों एक-दूसरे के विपरीतार्थक हैं? इसे समझने के लिए पहले हमें लोकप्रचलित अर्थों पर गहनता से विचार करना होगा और फिर उनकी तुलना संस्कृत व्याकरण के सही अर्थ से करनी होगी।

लोक व्यवहार में जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति शांत हो गया अर्थात् शान्ति को मृत्यु के समानार्थक समझा जाता है और यदि कहीं कोई दंगा-फसाद, झगड़ा चल रहा हो तो उसे क्रान्ति माना जाता है। वर्तमान में आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद जैसे सीरिया में आई एस आई एस की बर्बरता से लेकर कश्मीर में पत्थरबाजी तक को उनके समर्थक क्रान्ति के रूप में देखते हैं और वहीं दूसरी ओर इसके विरोधी इन आतंकी वारदातों को बंद करवा के शान्ति स्थापना की बात करते हैं। अब प्रश्न उठता है क्या यही सामान्य प्रचलित क्रान्ति और शान्ति है या इसके अर्थ इससे हटकर कुछ और हैं? इस प्रकार सामान्य प्रचलित अर्थों में शान्ति के उपरान्त क्रान्ति या क्रान्ति में शान्ति संभव प्रतीत नहीं होती। इसे समझने के लिए इनके संस्कृत व्याकरण शास्त्रों में दिए अर्थों को जानना होगा।

शमु धातु से क्तिन् प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग 'शान्ति' शब्द सिद्ध होता है। इसी प्रकार क्रमु धातु का क्तिन् प्रत्यय लगाकर 'क्रान्ति' शब्द है। 'शमु' शाम् का अर्थ है 'उपशाम्' या समन्वित होना। 'क्रमु' क्रम का अर्थ है 'पादविक्षेप' या आगे बढ़ना। इस प्रकार संस्कृत व्याकरण के अनुसार न तो शान्ति का अर्थ प्रगतिशून्यता है और न क्रान्ति का अर्थ तोड़-फोड़कर किसी चीज को अस्तव्यस्त करना है।

इसे और स्पष्ट रूप से समझने के लिए पहाड़ी नदी के तीव्र जल प्रवाहमान का उदाहरण लेते हैं। यदि तीव्र गति से प्रवाहमान पहाड़ी नदी का जल अपने निर्धारित मार्ग पर तटबंधों के बीच में चले तो वह उर्जा, बिजली, सिंचाई के लिए पानी प्रदान करता है अर्थात् बंधे हुए मार्ग पर सुव्यवस्थित या समन्वित ढंग से चलना भी शान्ति का प्रतीक है तथा उससे प्राप्त ऊर्जा, बिजली, सिंचाई का पानी आदि प्रगति की ओर ले जाने वाली क्रान्ति के प्रतीक हैं। इसके विपरीत यदि यही ऊर्जावान पहाड़ी नदी की जलधारा अपने मार्ग को छोड़कर बसी हुई आबादी के बीच में से निकलने लगती है तो हिमालयन सुनामी की तरह विनाश का कारण बनती है जिसे हम कदापि भी जल क्रान्ति का संज्ञा नहीं दे सकते।

अब इसे एक समाज के उदाहरण से समझें। कश्मीर में भ्रमित युवाओं द्वारा की जाने वाली पत्थरबाजी की घटनायें

जो देश के लिए स्वीकार्य संविधान के प्रावधानों को तोड़कर की जा रही हैं या फिर जेएनयू जैसे विश्वविद्यालयों में देश विरोधी नारेबाजी वैदिक साहित्य में दिए क्रान्ति के अन्तर्गत नहीं आतीं अपितु ये तो विघटनकारी विनाशलीला है। यदि यही युवाशक्ति उस पहाड़ी नदी के तीव्र गति से प्रवाहमान जल की तरह संविधान द्वारा स्थापित स्वीकार्य प्रावधानों के तटबंधों के अन्तर्गत रहकर चले और सुव्यवस्थित ढंग से

www.thearyasamaj.org

निर्माण कार्यों में लगे तो निश्चित रूप से न केवल अपनी व्यक्तिगत अपितु सामाजिक, प्रादेशिक और राष्ट्रीय प्रगति में सहायक सिद्ध होगी और यदि समन्वित होकर शान्तिपूर्वक किसी भी प्रगति की दिशा में एक साथ चल पड़े तो औद्योगिक या हरित या किसी भी क्रान्ति का सूत्रपात कर देगी।

किसी भी क्रान्ति अर्थात् एक दिशा विशेष में प्रगति से पूर्व उस क्रान्ति के अवयवों में शान्ति अर्थात् समन्वय होना अत्यंत आवश्यक होता है। यदि समन्वय न हो अर्थात् व्यवस्था न बनाई जाए या शान्ति स्थापित न की जाए तो प्रगतिसूचक क्रान्ति भी संभव नहीं है। इसे एक और उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं। अव्यवस्थित भीड़ में मची भगदड़ जैसा अक्सर मेलों या मंदिरों में उत्सवों के बाद किसी भ्रम के कारण होता है वह विनाश ही लाती है और कई लोग इस भगदड़ में मारे जाते हैं। वहीं सेना की सुव्यवस्थित समन्वित छोटी सी टुकड़ी भी बड़े से बड़े संकट के समय सफलतापूर्वक बचाव का कार्य करती है जैसा सेना ने कश्मीर में आई बाढ़ के समय करके दिखला दिया।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि हमें राष्ट्र में प्रगति के लिए शान्ति और क्रान्ति के सही अर्थों को समझना होगा और पहले समन्वय स्थापित करके शान्तिपूर्वक किसी भी दिशा विशेष उद्योग, हरित व निर्माण आदि में कार्य करते हुए प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हुए क्रान्ति पैदा करनी होगी।

- ६०२ जी.एच. ५३, सैक्टर २०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ०९४६७६०८६८६, ०९८७८७४८८९९

❑❑❑

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (चतुर्थ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

■	१	य	■	■	२	ख	■	■	३	त
४ वै		■	■	५	■	■	६	ह	६	■
७		नु ७		ल ७	■	८	यं	८	र ८	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. सत्य बोले पर सत्य कैसा हो?
२. जहाँ अयोग्य तथा मूर्ख जन अध्यापक होते हैं वहाँ किसकी वृद्धि होती है?
३. महर्षि ने विद्यार्थियों के कितने दोष गिनाए हैं?
४. द्वीप द्वीपान्तरों में जाना आना विशेषरूप से किस वर्ग का कर्त्तव्य बताया गया है?
५. मनुस्मृति में स्त्री को दूषित करने वाले कितने दुर्गुण गिनाए हैं?
६. सारे आश्रम किसके आश्रय से स्थिर रहते हैं?
७. मनुस्मृति के वही श्लोक मान्य हैं जो किसके अनुकूल हैं?
८. गृहस्थाश्रम में सुख का एक कारण है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११/१६ का सही उत्तर

१. पाकाग्नि   २. सोलह   ३. अन्न
४. अतिथि   ५. पाषण्डी
६. सत्संग   ७. बलिवैश्वदेव

"विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ फरवरी २०१७

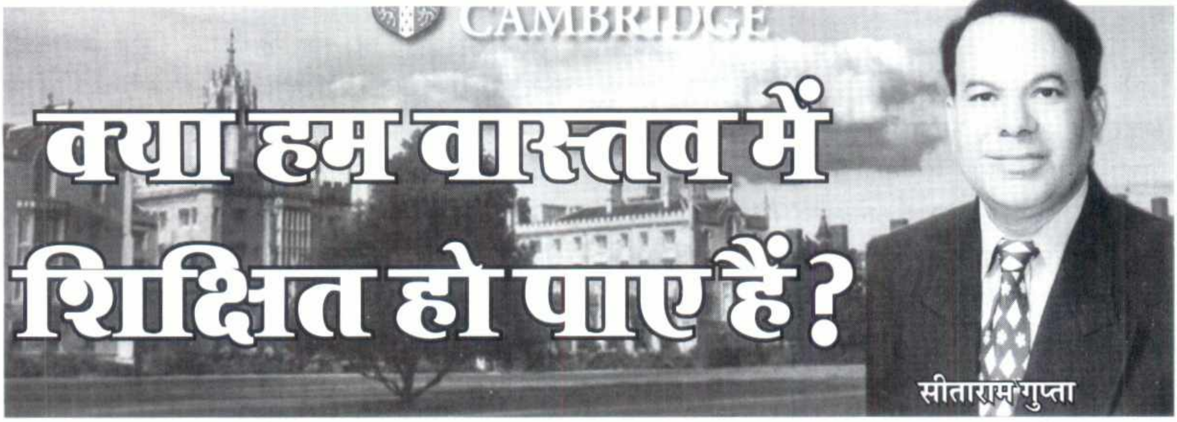

क्या हम वास्तव में शिक्षित हो पाए हैं?

सीताराम गुप्ता

क्या हम वास्तव में शिक्षित हैं?एक शिक्षित समाज में ये प्रश्न पूछना या उठाना कुछ अटपटा-सा लग सकता है लेकिन है ये एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न। हम में से कई महानुभावों ने देश के चर्चित विश्वविद्यालयों अथवा अग्रणी शिक्षा संस्थानों में अध्ययन किया है। बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ हासिल की हैं। कई उपयोगी कुशलताओं का विकास किया है इसमें भी संदेह नहीं। लेकिन फिर भी प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या हम वास्तव में शिक्षित हैं? इस प्रश्न के साथ ही एक और प्रश्न उठता है और वो ये कि शिक्षा क्या है? क्या बी.ए., एम.ए., बी.एससी., एम.एससी., एम.फिल., पीएच.डी., डी.लिट. बी.टेक., एम.टेक., एम.बी.बी.एस., एम.डी. अथवा अन्य डिप्लोमा-डिग्री प्राप्त कर लेना ही शिक्षा है? क्या इन कोर्सेज़ में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो जाना ही हमारी शैक्षिक योग्यता के स्तर को निर्धारित करने में सक्षम है? और यदि इन सब का महत्त्व नहीं है तो फिर क्यों हम इन उपाधियों के पीछे बेतहाशा दौड़ते हैं?

प्रश्न उठता है कि क्यों आज का युवा एक अदद उच्च स्तरीय प्रोफेशनल डिग्री पाने के लिए अपने यौवन का एक स्वर्णिम भाग स्वाहा कर डालता है? क्यों माता-पिता अपने बच्चों को एक अच्छे विद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए लाखों रुपये और एक प्रोफेशनल कोर्स में प्रवेश दिलाने के लिए करोड़ों रुपये देने से भी पीछे नहीं हटते?क्यों लोग क़र्ज़ लेकर भी उच्च शिक्षा पाने को लालायित रहते हैं?कुछ लोग स्कूल-कॉलिजों में औपचारिक शिक्षा तो नहीं प्राप्त कर पाते लेकिन अपने स्वाध्याय से स्कूल-कॉलिजों में शिक्षा पाने वालों से कम भी नहीं होते। और अंत में, क्या एक अदद ख़ूबसूरत सी डिग्री प्राप्त हो जाने अथवा स्वाध्याय मात्र से ही शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हो जाती है?इन सब प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए शिक्षा के वास्तविक स्वरूप को समझने की आवश्यकता है। शिक्षा क्या है?

शिक्षा के अनेक स्तर और स्वरूप समाज में प्रचलित होते हैं। भौगोलिक और सांस्कृतिक अंतर के कारण भी अलग-अलग स्थानों पर ये रूप अलग-अलग हो सकते हैं। इस प्रकार शिक्षा का स्वरूप स्थानसापेक्ष अथवा समाजसापेक्ष होना स्वाभाविक है। संस्कृति और सभ्यता के विकास के साथ शिक्षा अभिन्न रूप से जुड़ी होती है इसमें संदेह नहीं। यदि मोटे तौर पर देखें तो संस्कृति और सभ्यता का विकास ही शिक्षा है। यहाँ हम कह सकते हैं कि मनुष्य का विकास ही शिक्षा है। मनुष्य के विकास के अभाव में कैसी शिक्षा?विकास से तात्पर्य है सर्वांगीण विकास। जो व्यक्ति, समाज और संपूर्ण ग्रह अर्थात् पूरी धरती के विकास में सहायक हो वही शिक्षा है। जो व्यक्ति विशेष का सर्वांगीण विकास तो करे लेकिन समाज का नहीं उस शिक्षा में कुछ कमी है। यदि शिक्षा समाज का सर्वांगीण विकास करे तो हर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है लेकिन कुछ व्यक्तियों का विकास समाज का विकास नहीं।

अविकसित समाज के तथाकथित चंद विकसित व्यक्ति सही मायनों में पूर्ण रूप से विकसित नहीं कहे जा सकते। इसी प्रकार जब तक समाज में अशिक्षा का बोलबाला है तब तक शिक्षित व्यक्ति भी पूर्ण रूप से शिक्षित नहीं माने जा सकते। जब विकास की बात आती है तो काल की बात आती है। सालों, सदियों और सहस्राब्दियों में होता है थोड़ा-बहुत विकास। अतः विकास से जुड़ी शिक्षा एक सी नहीं होती। वह

भी परिवर्तनशील है। वह भी विकसित होती है। इस प्रकार शिक्षा कालसापेक्ष भी है। बीते कल की शिक्षा आज अप्रासंगिक अथवा अनुपयोगी हो सकती है। इस तरह शिक्षा अलग-अलग स्थानों और युगों में अलग-अलग रूपों में रहती है। शिक्षा को और भी अनेकानेक स्तरों और रूपों में विभाजित किया जा सकता है। ऊपर सर्वांगीण विकास की बात हुई है। यदि मनुष्य के संदर्भ में सर्वांगीण विकास की बात करें तो उसके भौतिक शरीर, मन और चेतना के विकास का नाम ही उसका सर्वांगीण विकास है। समाज की दृष्टि से समाज के हर वर्ग का पूर्ण विकास ही सर्वांगीण विकास है। **हमारी अपनी इस धरती को क्षति पहुँचाए बिना, इसके वायुमंडल को दूषित किए बिना तथा प्रकृति के सौंदर्य को नष्ट किए बिना मनुष्य और समाज के विकास के लिए जो भी प्रयास हम कर रहे हैं वो सब शिक्षा के अंतर्गत आते हैं।** मनुष्य द्वारा प्रकृति के और मनुष्य के परस्पर एक दूसरे के शोषण की प्रक्रिया को समाप्त करने की दिशा में अग्रसर होना ही शिक्षा है। अब प्रश्न उठता है कि इस प्रकार की शिक्षा का स्वरूप कैसा होता है तथा इस के लिए किन-किन साधनों की ज़रूरत पड़ती है?

क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली द्वारा इस उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है? इसे समझने के लिए पहले दो शब्दों को जानना होगा और वे हैं शिक्षा और साक्षरता। शिक्षा को समझना थोड़ा मुश्किल है लेकिन साक्षरता को समझना अपेक्षाकृत सरल है। साक्षरता का अर्थ है मात्र अक्षर ज्ञान। यानी किसी भाषा को पढ़ना और लिखना जानना। हमारे यहाँ वो सभी लोग जो अँगूठा लगाने की बजाय किसी तरह ग़लत-सलत वर्तनी के साथ अपना नाम ही लिख पाते हैं साक्षर वर्ग में आते हैं। तो क्या फिर वो लोग जो अच्छी तरह से लिख-पढ़ सकते हैं या जो उच्च डिग्रीधारी हैं वही शिक्षित वर्ग में आते हैं?वास्तव में उच्च डिग्रीधारी व्यक्ति भी शिक्षित नहीं कहा जा सकता यदि उसमें शिक्षा नामक तत्त्व का समावेश नहीं। अब प्रश्न उठता है कि क्या साक्षरता निरर्थक है। उसका शिक्षा से कोई संबंध नहीं?नहीं साक्षरता निरर्थक नहीं लेकिन फिर भी यह शिक्षा नहीं है।

साक्षरता अथवा अक्षर-ज्ञान शिक्षा नहीं लेकिन साक्षरता अथवा अक्षर-ज्ञान शिक्षा में बाधक या शिक्षा का विरोधी बिलकुल नहीं अपितु सहायक होता है। कबीर का उदाहरण हमारे सामने है। वे निपट निरक्षर थे लेकिन क्या वे अशिक्षित कहे जा सकते हैं?हर्गिज़ नहीं। क्या अक्षर-ज्ञान की कमी उनकी शिक्षा में बाधक बनी? और यदि कबीर को अक्षर-ज्ञान होता तो क्या वो उनकी शिक्षा में बाधक बनता?बिलकुल नहीं। आज हम बेशक शिक्षित न हों लेकिन अपने अक्षर-ज्ञान की वजह से ही कबीर को जानते हैं इसमें संदेह नहीं। साक्षरता अथवा अक्षर-ज्ञान उपयोगी है, शिक्षा में सहायक है लेकिन स्वयं में शिक्षा नहीं। कबीर की वाणी से लाभान्वित होने की क्षमता का विकास होना वास्तव में शिक्षा है जो एक आंतरिक तत्त्व है। कबीर की वाणी को पढ़ने का सामर्थ्य साक्षरता है तो उसे समझने की योग्यता भी केवल बौद्धिकता है। उसके उपयोगी तत्त्वों द्वारा मनुष्य का सकारात्मक विकास ही सही शिक्षा है।

प्रायः ऐसी घटनाएँ देखने-सुनने में आती हैं कि किसी नौकर से कोई चीज़ टूट गई या कुछ नुक़सान हो गया तो मालिक द्वारा उसको अमानवीय यातनाएँ दी गईं। पिछले दिनों ऐसे मामले भी प्रकाश में आए हैं कि ऐसी यातनाओं के कारण नौकर या नौकरानी की मृत्यु तक हो गई। माना कि एक टी

सैट या क्रिस्टल का गिलास बहुत क़ीमती है लेकिन एक समृद्ध व्यक्ति के लिए ये क्या मायने रखता है और फिर क्या एक कप, प्लेट या गिलास की कीमत एक व्यक्ति की जान से ज़्यादा महत्वपूर्ण हो सकती है?कदापि नहीं। फिर क्यों ऐसा होता है कि हम थोड़े से आर्थिक नुक़सान के लिए किसी की जान लेने से भी नहीं हिचकिचाते? कारण स्पष्ट है और वो है ज्ञान व शिक्षा का अभाव। इस प्रकार की घटनाएँ न केवल गाँवों और क़स्बों तक सीमित हैं अपितु बड़े-बड़े शहरों और महानगरों तक में ऐसी घटनाएँ घटित होना आम बात है। इस प्रकार की घटनाएँ न केवल अशिक्षित अथवा अल्पशिक्षित लोगों द्वारा अंजाम दी जाती हैं अपितु समाज के शिक्षित और आज की भाषा में कहें तो प्रोफेशनल और समृद्ध लोगों द्वारा भी ऐसी घटनाओं को अंजाम देना साधारण-सी बात है और इसमें महिलाएँ भी पीछे नहीं हैं। किसी की जान लेने का अर्थ है ज़िंदगी भर जेल की सलाखों के पीछे सड़ना या फाँसी। क्या कारण है कि हम विवेक से

www.thearyasamaj.org

काम न लेकर दूसरों का और स्वयं का जीवन संकट में डाल देते हैं? ऐसे अविवेकी लोगों को भी शिक्षित की श्रेणी में रखना उचित प्रतीत नहीं होता।

पिछले दिनों एक समाचार देखने को मिला कि एक महिला ने अपने नौकर की इस क़दर पिटाई की कि उसकी मौत ही हो गई और इस पिटाई का कारण था नौकर द्वारा घर के पालतू कुत्ते को समय पर भोजन न देना। एक और घटना में नौकर ने चाय फ़र्श पर गिरा दी तो मालकिन ने उसे थप्पड़ जड़ दिया। अगले दिन सब्ज़ी में नमक ज़्यादा हो गया तो भी मालकिन ने नौकर की अच्छी ख़ासी धुनाई कर डाली। बदले में एक दिन नौकर ने अपनी बुजुर्ग मालकिन, जो एक रिटायर्ड प्रिंसिपल थीं, की हत्या ही कर डाली। मक़्तूला एक प्रिंसिपल थीं तो ज़ाहिर है कि ख़ूब पढ़ी-लिखी भी होंगी ही लेकिन क्या मात्र शैक्षिक डिग्रियों से जीवन प्रवाह सुचारू रूप से प्रवाहित हो सकता है? दान-धर्म के नाम पर हम लाखों रुपये खर्च करने से नहीं चूकते लेकिन जो लोग दिन-रात हमारी सेवा में संलग्न रहते हैं उनके प्रति हम प्रायः कठोर ही बने रहते हैं। क्या यही धार्मिकता है? क्या यही ज्ञानशीलता है?क्या इसमें शिक्षा का अभाव नहीं झलकता?

“स्वयं को परिग्रह, दूसरों के शोषण, असहिष्णुता, असहजता, धर्मांधता, अंधविश्वास और आडम्बर से मुक्त कर लेना ही शिक्षित होना है।”

स्वयं को परिग्रह, दूसरों के शोषण, असहिष्णुता, असहजता, धर्मांधता, अंधविश्वास और आडंबर से मुक्त कर लेना ही शिक्षित होना है। स्वयं में दूसरों के दुख-दर्द के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करना ही शिक्षा है। आज अक्षर-ज्ञान और बौद्धिकता के आधिक्य के कारण ही हम अधिकाधिक अहंकारी होते जा रहे हैं। यदि हम वास्तव में शिक्षित होते तो हमारा दंभ बढ़ने की अपेक्षा कम होता जाता। हम प्रायः साधनों को गंतव्य मानने की भूल कर बैठते हैं। आज हम अनेकानेक विषयों का पठन-पाठन करते हैं जैसे भाषा, गणित, विज्ञान, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्रबंधन, धर्मज्ञान आदि। ये सब शिक्षा के साधन हैं। इनसे जीवन में व्यावहारिक या व्यावसायिक कुशलता उत्पन्न होती है। व्यावहारिक अथवा व्यावसायिक कुशलता से सामंजस्य उत्पन्न होता है। सामंजस्य से द्वंद्व की समाप्ति संभव है। प्रायः सभी व्याधियों के मूल में द्वंद्व ही होता है। द्वंद्व की समाप्ति ही संपूर्ण उपचार में सहायक है। द्वंद्व ही अज्ञान अथवा अशिक्षा का कारण बनता है।

कहा गया है **'सा विद्या या विमुक्तये।'** जो हमें मुक्त करे वही विद्या है। मुक्ति से तात्पर्य है अज्ञान अथवा अशिक्षा से मुक्ति। नकारात्मक भावों से मुक्ति। मनुष्य का एक परम लक्ष्य होता है नकारात्मक भावों से मुक्त होकर आत्म-विकास करना। दूसरों के विकास में बाधा न बनते हुए स्वयं का विकास ही शिक्षा है। शिक्षा के लिए ज्ञान शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। शिक्षा या विद्या की तरह ज्ञान भी विषयों अथवा पदार्थों का नहीं होता। बाह्य जगत् का ज्ञान तो सूचना मात्र है। वास्तविक ज्ञान तो स्वयं के जानने को कहा गया है। **जो स्वयं को जानने की दिशा में अग्रसर हो गया वही सच्चा ज्ञानी और वही सच्चा शिक्षित भी है।** शिक्षा वास्तव में बाह्य परिवर्तन नहीं अपितु आंतरिक परिवर्तन है। शिक्षा मनुष्य का रूपांतरण है।

मनुष्य का रूपांतरण कैसे संभव है इसके लिए महात्मा ज्योतिबा फुले के जीवन की एक वास्तविक घटना देखिए। महात्मा ज्योतिबा फुले एक महान् समाज-सुधारक और निर्भीक व्यक्ति थे। उन्होंने न केवल अपनी पत्नी सावित्रीबाई को पढ़ाया-लिखाया अपितु स्त्रियों के लिए पाठशाला भी खोली।

समाज के कुछ लोगों को यह स्वीकार नहीं था। उन्होंने महात्मा ज्योतिबा फुले की हत्या करने के लिए कुछ लोगों को तैयार कर लिया। दो व्यक्ति महात्मा ज्योतिबा फुले की हत्या के उद्देश्य से उनके घर पहुँचे। महात्मा ज्योतिबा फुले के ये पूछने पर कि उनकी उससे कोई दुश्मनी नहीं है फिर भी वे क्यों उनकी जान लेना चाहते हैं तो हत्यारों ने बताया कि वो ये सब पैसे के लिए कर रहे हैं। तब महात्मा फुले ने पत्नी से कहा, “सावित्री मेरे मरने के बाद भी शिक्षा और समाज सुधार का काम जारी रखना।” उसके बाद महात्मा ज्योतिबा फुले ने हत्यारों से कहा कि वे मरने के लिए तैयार हैं। फिर उन्होंने हत्यारों से पूछा, “आपके बच्चे पाठशाला तो जाते होंगे? यदि नहीं जाते तो कल ही पाठशाला में उनका नाम लिखवा देना ताकि बड़े होने पर वे कोई सही काम-धंधा कर सकें और पैसे के लिए किसी की हत्या करने की नौबत न आए। ज्योतिबा की बातों से उनका मन ही बदल गया। हत्या तो दूर वे उनके शिष्य बन गए। एक तो बाद में पढ़-लिख कर वेद-शास्त्रों का प्रकांड पंडित बन गया। महान् व्यक्तियों के

संपर्क में आकर, उनके श्रेष्ठ आचरण से प्रभावित होकर सही मार्ग पर अग्रसर होना ही वास्तविक शिक्षा है और इसके लिए किसी विद्यालय, विश्वविद्यालय या अन्य किसी बड़े शिक्षा संस्थान में जाने की भी ज़रूरत नहीं।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम शिक्षा संस्थानों की उपेक्षा करें अथवा पढ़ना-लिखना छोड़ दें। मनुष्य के बाह्य विकास एवं वास्तविक शिक्षा प्राप्ति के लिए साक्षरता तथा औपचारिक शिक्षा भी अनिवार्य है। अनौपचारिक शिक्षा तो हम बिना किसी प्रयास के भी प्राप्त करते रहते हैं लेकिन हमारी अनौपचारिक शिक्षा भी ऐसी हो जो हमारे रूपांतरण में सहायक हो। इसके लिए भी हमें अपने लिए सही परिवेश, अच्छे मित्रों व सहयोगियों, अच्छी पुस्तकों तथा अच्छी आदतों के चुनाव की योग्यता विकसित करनी होगी। औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा में पूर्ण संतुलन उत्पन्न करके हम सही अर्थों में शिक्षित होने की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं, अपना सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।

गाँधीजी ने कहा है कि कोई असत्य से सत्य को नहीं पा सकता। सत्य को पाने के लिए हमेशा सत्य का आचरण करना ही होगा। लोग आम तौर पर 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' की नीति पर चलते हैं। 'जैसे को तैसा' अथवा 'ईंट का जवाब पत्थर से' देने के नियम को मानते हैं। गाँधीजी ने सदा साधनों की शुद्धता पर बल दिया। शिक्षा में उदात्त मूल्यों के अभाव में यह संभव ही नहीं। इन उदात्त मूल्यों की प्राप्ति के लिए सरकार के साथ-साथ स्वैच्छिक संस्थानों को भी अपने उत्तरदायित्व को समझ कर सही दिशा में अग्रसर होना चाहिए अन्यथा ये सारी प्रक्रिया एक तमाशा बनकर रह जाएगी। आज समाज में हर जगह बेचैनी व्याप्त है। तनाव, संवेदनहीनता, असुरक्षा की भावना, प्रतिशोध की भावना, हिंसा व अन्य नकारात्मक मूल्य सर्वत्र दिखलाई पड़ते हैं और इसका कारण है नैतिक परिवर्तन में विचलन। मूल्यों के अभाव में सारी शिक्षा और उससे प्राप्त उन्नति अपूर्ण है, घातक है। आज हम सबको अपना सारा ध्यान उत्पादकता के साथ-साथ उसकी गुणवत्ता पर भी केंद्रित करना होगा। तभी हम सही अर्थों में समाज को आगे ले जा पाएँगे।

- ए. डी.-१०६-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-११००३४
फोन नं. ०९५५५६२२३२३

□□□

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों हेतु समुचित व्यवस्था

जीवन में उदात्त नैतिक मूल्य स्वयमेव स्थापित नहीं होते, भागीरथ प्रयत्न करना होता है। भारतीय मनीषा ने इस हेतु १६ संस्कारों का विधान किया है। जो प्रत्येक गृहस्थ को करवाने चाहिए। कई सज्जनों को लगता है कि यह कठिन तथा व्यय-साध्य कार्य है। हमारा निवेदन है कि ऐसा कुछ नहीं है। संस्कार चित्त-प्रसाद-अभिवृद्धि का हेतु है। आप केवल दूरभाष पर अपनी अभिलाषा बतावें। न्यास के पुरोहित पंडित नवनीत आर्य सारा कार्य, स्वतः व्यवस्था कर सुन्दरता से सम्पन्न करायेंगे।

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०६३१४५३५३७६
कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

दृष्टिकोण

नववर्ष में नवीनता क्या?

इस समय पूरे देश में २०१७ आने के उत्सव मनाये जा रहे हैं और इन उत्सवों का स्वरूप भी 'विशुद्ध आधुनिक' है दूसरी तरफ इन्टरनेट पर हिन्दुत्ववादी और राष्ट्रवादी लोग इन उत्सवों की प्रासंगिकता पर चर्चाएँ कर रहे हैं। उत्सवों का रंग बड़े नगरों में कुछ ज्यादा ही चटख है और विरोधी स्वरों में जोर इस बात पर है कि इस नववर्ष का मूल विदेश में है या ये किसी दूसरे धर्म के प्रवर्तक के जन्म के आधार पर हैं। सभी के पास अपने तर्क हैं और मेरे पास भी हैं।

मुझे इस बात से कोई समस्या नहीं है कि इस नववर्ष का मूल भारत भूमि से दूर एशिया और यूरोप की सीमा पर स्थित बेथेहलम में है। हम अभी भी उन वेद ऋचाओं के अनुसार चलते हैं जिनका कहना है कि 'यज्ञ' अर्थात् अच्छे विचार समस्त दिशाओं से हमारे पास आयें या 'ज्ञान' यदि शत्रु से भी मिले तो उसे ले लेना चाहिए, परन्तु हम यह अवश्य देखना चाहेंगे कि जो हमें मिल रहा है ये ज्ञान है या अज्ञान है और यदि ज्ञान है भी तो मंगलकारी है या नहीं, लोकहितकारी है या नहीं है?

सबसे पहले बात करते हैं ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा के जन्म दिन की। अगर ईसा का जन्म २५ दिसंबर को हुआ था तो नववर्ष १ जनवरी को क्यूँ? इसके अतिरिक्त ईसा का जन्म बेथेहलम में हुआ था और उनके जन्म के समय एक गुफा में भेड़ों और गडरियों की भी कथा है। परन्तु बेथेहलम में जनवरी के इस ठन्डे मौसम में गडरिये अपनी भेड़ों को लेकर बाहर नहीं निकलते हैं, इस संबंध में मार्च या अप्रैल वाली परंपरा अधिक उचित प्रतीत होती है। जिस प्रकार ईसा ईश्वर का पुत्र है इस बात का निर्णय ईसा की मृत्यु के ३०० वर्षों बाद पादरियों की सभा में लिया गया था उसी प्रकार इस बात का भी निर्णय लिया गया हो कि ईसा का जन्म नववर्ष के अवसर पर हुआ था तो आश्चर्य नहीं। एक दूसरी संभावना ये दिखती है कि ईसा का जन्म हिन्दू नववर्ष के दिन हुआ हो (जो कि तार्किक रूप से भी सही लगता है) और ये बात उस समय के उस स्थान के जनमानस में बैठ गयी हो परन्तु काल-गणना सही न होने के कारण वो लोग उसे सँभाल न पाए हों और बाद में किसी पादरी ने कुछ निर्णय कर दिए हों।

अब बात ग्रेगेरियन कैलेंडर कि की जाय। कुछ लोग कह सकते हैं कि भले ही इस नववर्ष का ईसा से कोई सम्बन्ध न हो पर एक वर्ष पूर्ण होने पर उत्सव किया जाता है। परन्तु अभी तक इस 'वर्ष' की सही और उचित परिभाषा भी निर्धारित नहीं की जा सकी है। यदि पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा करने को एक वर्ष माना जाय तो ग्रेगेरियन वर्ष इससे छोटा होता है और अगर ४ वर्षों में किये जाने वाले संशोधन को ध्यान में रखा जाय तो यह एक वर्ष से बड़ा हो जाता है। इसमें बहुत अधिक विसंगतियाँ हैं और इसकी सर्वमान्यता भी छद्म है इसीलिए तो अक्तूबर क्रांति की वर्षगाँठ नवम्बर में होती है और लन्दन में एक बार दंगे हो चुके थे क्यूँकि ३ मार्च के बाद वाले दिन को १८ मार्च घोषित कर दिया गया था।

अब परंपरा की बात कर लेते हैं। हिन्दू नववर्ष की परंपरा कम से कम ५००० वर्ष पुरानी तो है ही इसका हमारे पास साक्ष्य है और इस नववर्ष की तो तिथि का ही निर्धारण उचित तरीके से नहीं हुआ है। अगर भारतीय परंपरा को छोड़ दिया जाय और यूरोप की ही बात कर ली जाय तो मार्च में नववर्ष मनाने की परंपरा कहीं अधिक पुरानी और समृद्ध है।

अब बात करते हैं आधुनिकता के ध्वजवाहकों की जिनका मानना है कि 'जमाने के साथ चलो' या 'पुरानी बातें छोड़ो और नए तरीकों को अपनाओ' तो क्या किसी चीज को इसलिए ही अपनाया जा सकता है कि वो नयी है? एक प्रसिद्ध वाक्य है कि 'बाजार में तकनीकी या नवीनता नहीं अपितु उपयोगिता बिकती है' जब बाजार में 'केवल नवीनता' नहीं बिक सकती है तो इस 'मूर्खतापूर्ण नवीनता' को हमारे जीवन में इतना अधिक महत्वपूर्ण स्थान क्यूँ मिलना चाहिए?

अब इसके बाद हम बात करते हैं उन लोगों की जो कहते हैं कि 'अगर १ जनवरी को थोड़ी सी मस्ती कर भी लो तो क्या फर्क पड़ गया?' या क्या हमारी संस्कृति इतनी कमजोर है कि कुछ 'New Year Parties' से खत्म हो जायेगी?' या सबसे 'धमाकेदार' 'क्या पूरी दुनिया पागल है?' तो सबसे पहले तो यह कि जिस प्रकार Christianity का Christ से कोई सम्बन्ध नहीं है और 'वेलेंटाइन डे के उत्सवों के स्वरुप' का संत वेलेंटाइन से कोई सम्बन्ध नहीं है उसी प्रकार इस नववर्ष

www.thearyasamaj.org

में कुछ भी नवीन नहीं है। इसकी लोकप्रियता का कारण केवल बहुराष्ट्रीय कंपनियों की वह रणनीति है जिसके अनुसार 'खर्च करना' ही एक मात्र जीवन शैली है और यही एक मात्र उत्सवपूर्ण जीवन शैली है, खर्च करना ही आप की महानता की निशानी है और खर्च करना ही आप की उदारता का प्रतीक है। इन उत्सवों के स्वरूप को देखिये पूरा का पूरा ध्यान खर्च करने पर रहता है और पूरी तरह से मूर्खतापूर्ण खर्चे करने पर जो कि केवल बड़ी कम्पनियों को ही लाभ पहुँचाती हैं। ये बड़ी कंपनियाँ 'केवल खर्च करना' हमारी जीवन शैली बना देना चाहती हैं जो कि हमें स्वीकार है क्यूँकि ये अमंगलकारी है। इस 'थोड़ी सी मस्ती' से फर्क ये पड़ता है कि आप मानसिक दासता को स्वीकार कर लेते हैं और आप को पता भी नहीं चलता है कि आप बहुराष्ट्रीय कंपनियों, प्रबंधकों के मानसिक चक्रव्यूह में फँस चुके हैं। हमारी भारतीय संस्कृति खतरे में नहीं पड़ सकती है क्यूँकि यह तो सत्य पर आधारित होती है और सत्य तो 'देश काल की सीमाओं से परे' होता है, परन्तु हमारी यह सत्य सनातन संस्कृति ही हमें यह कर्तव्य बोध देती है कि हम भटके हुए लोगों को सन्मार्ग दिखाएँ। हमारी संस्कृति हमें यह सिखाती है कि अगर कुछ लोग मूर्ख हैं तो यह उनकी गलती नहीं है अपितु उस समाज के ज्ञानियों की गलती है कि उन्होंने उन मूर्खों को ज्ञान क्यूँ नहीं दिया।

अंत में कुछ शब्द उन ज्ञानियों से जो कि हमारे इस लेख से सहमत हैं और पूरी शक्ति से उन लोगों को कोसने में लगे हुए हैं जो इस 'नववर्ष उत्सव' को मानते हैं। ये हालत एक दिन में नहीं बिगड़े हैं तो एक दिन में सुधरेंगे भी नहीं। हमारे बुजुर्गों ने विकास के लोभ में जो पथ चुना था वो यहीं पर आता है। जिसे आधुनिकता का पर्याय माना गया था उसकी यही परिणिति थी। आज हम जो काट रहे हैं ये कम से कम २० वर्ष पहले या शायद ६० वर्ष पहले बोया गया था। आज की फसल को कोसने या गाली देने के बजाए अगर हम कल के लिए फसल बोयेंगे तो तो ज्यादा अच्छा रहेगा ऐसा मेरा निजीरूप से मानना है और हम इसी का प्रयास भी कर रहे हैं।

- साभार- हिन्दू शक्ति

□□□

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १६ पर देखें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

www.thearyasamaj.org

Salient feature of Manusmriti

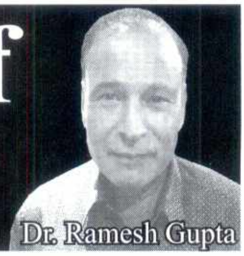

Contd.... from previous Issue

Dr. Ramesh Gupta

Different segments of society: Sage Manu ji advocated 4 divisions of society called VarnaVyavasthā, and it was based on the individual's ability, rather than birth. These Varṇas were Bhraman, Kṣatriya, Vaiśya and Śūdra, which denoted the people who would be educators and spiritual guides, those who would rule and protect, those who would maintain the economics and trade, and finally those who would serve the above three segments in society. Anyone who would have a certain level of ability was free to move from one Varṇa to another. One such śloka is:

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च॥ - मनु. १०/६५

The meaning of this sloka is that based on the actions and ability, people would become Brāhmana, Ksatriya or Vaisya and if they lack an ability required to become any one of these, they would remain as Sudra. Even Bhagvad Gītā has mentioned the same social setup based on a person's ability and actions.

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागश:। - गीता ४/१३

जन्मना जायते शूद्र: संस्कारात्भवेत् द्विज:।
वेद पाठात्भवेत्विप्र: ब्रह्मजानातिती ब्राह्मण:॥ - यास्क मुनि

All 4 segments of society have been assigned certain responsibilities. These are:

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पत्॥ - मनु. १/८८

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याऽध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासत:॥ - मनु. १/८६

पशूनां रक्षणं दानमिज्याऽध्ययनमेव च।
वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च॥ - मनु. १/९०

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभु: कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया॥ - मनु. १/९१

A Brahmin should teach without deceit and with affection and impart proper knowledge according to Vaidik (Vedic) teachings. A Ksatriya should have the quality of protecting society in every conceivable way and give the gift of fearlessness while maintaining their daily lifestyle which includes performance of Agnihotra and control over senses. A Vaiśya should be able to carry on business while sharing a portion of earned wealth with the rest of society, as well as possess knowledge of Vedas and agricultural or other trades, and live a righteous life. A Śūdra should have a strong physical build and be able to serve without resentment.

A Brahmin can become a Śūdra if he/she fails to achieve true knowledge and propagate it in the society.

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय:॥ - मनु. २/१६८

It is obvious that somewhere along the line, people who got a certain level of authority wanted to hold on to it, and the caste system came into being. There are many examples of transformation from one Varṇa to the other through the history. Some of these are: SageVishwamitra, Kavaśa Ailuśa, Vidura, Dvāpī, Mudgala, Satyakāma Jābāla, Prsadhra, Nābhāga, Agnivēsya, mātamga and Rāvana. There have been many reformers, including Swami Dayanand Saraswati, to bring different segments of society together. It is the selfish and misguided people who have not allowed this movement to be very effective.

Place of women in society. In several ślokas, Manu has clearly laid down that those

societies which provide respect and dignity to women flourish with nobility and prosperity. On the other hand, those who don't do so, face miseries and failure (verse 3.56).

Manu has clearly declared that those who desire prosperity should ensure that women in their family are always happy and do not face miseries (verse 3.55). He also states that women should be able to participate in and conduct various religious ceremonies. Verse 9.96 states that those who deny Vedas or Vaidik (Vedic) rituals to women are anti-religion and anti-humanity. It also states

that women should be provided autonomy and leadership in managing finances and conducting other responsibilities in life (verse 9.11). Freedom, rather than restrain, of women has been championed as well (verse 9.12). The protection of women has been advocated, but this protection does not mean restriction.Manu ji also says that it is better to keep a woman unmarried than to force her to marry an undeserving person (9.89), and that a woman should be able to choose her own husband after she attains maturity (9.90-9.91). Property rights for the son and daughter should be equal (9.130-9.131). There was also a provision placed in Manusmrti for strict punishment of those who harm women (8.323, 9.232, 8.352).

Punishment for a crime: It is a common belief that Manu has advocated protection to the higher segment of society, especially the Brahmins. **On examining the text, reverse seems to be the case.** Much more severe punishments have been advocated for those who are more educated and belong to the higher segment of society. For example, when a punishment for an ordinary citizen is one cent, the punishment for those in the ruling class would be 1000 cents, or 1000x (8.336). It is stated in Manusmrti that if one conducts a theft willingly and with full knowledge of the implications of such a conduct, the person should be penalized 8 times more compared to the person doing the same crime who belongs to a Śūdra Varṇa.

In other words, **the punishment should be directly proportional to the knowledge and social status of the criminal.** The bottom line is that a birth-based caste system does not fit the code of conduct laid down by sage Manu. If the society and the governments all follow the penal system and the social system proposed by Manusmrti, the world would be free from corrupt people, politicians and others, and simply be a better place to live in. It is the responsibility of every individual practicing Arya Samaj principles that they clearly understand the reality of teachings of Manusmṛti and

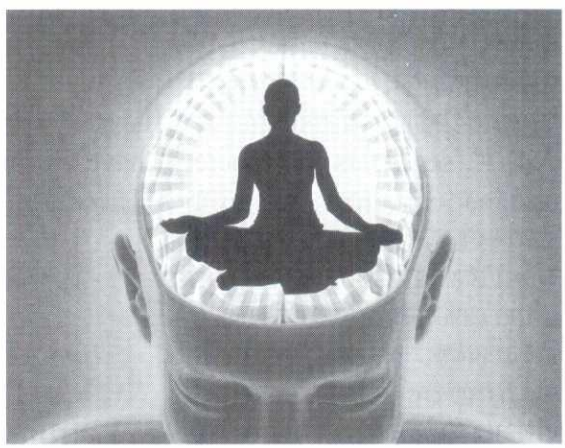

propagate those in the society.

Donation and giving: The gift of knowledge is superior to any other giving

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।
वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम्।। - मनु. ४/२३३

Restraining your senses: Like a driver restraining his horses, a wise man must strive to restrain his senses.

इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु।
संयमे यत्नमातिष्ठेद्विद्वान्यन्तेव वाजिनाम्।। - मनु. २/८८

Power of control of Mind: Once Mind has been subdued, then all our senses come under control.

एकादशं मनो ज्ञेयं स्वगुणेनोभयात्मकम्।
यस्मिञ्जिते जितावेतौ भवत: पञ्चकौ गणौ।। - मनु. २/६२

Human desires: Through enjoyment, desire merely becomes stronger, like fire fed with fuel.

न जातु काम: कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।। - मनु. २/६४

Attachment: Desire to seek pleasures only increases as people indulge deeper in sensual gratification.

यथा यथा निषेवन्ते विषयान्विषयात्मका:।
तथा तथा कुशलता तेषां तेषूपजायते।। - मनु. १२/७३

How to achieve lasing happiness and aananda:

Only be pursuit of True knowledge.Also a knowledgeable person should be able to withstand constructive criticism with pleasure and should react to criticism in a mature and peaceful manner.

न तथैतानि शक्यन्ते संनियन्तुमसेवया।
विषयेषु प्रजुष्टानि यथा ज्ञानेन नित्यश:।। - मनु. २/६६

Respect to teacher and elders and those who have acquired true knowledge:

ब्रह्मारम्भेऽवसाने च पादौ ग्राह्यौ गुरो:सदा।
संहत्य हस्तावध्येयं स हि ब्रह्माञ्जलि: स्मृत:।। - मनु. २/७१

A student must offer salutations to the teacher with clasped palms and touch the teacher's feet before the lesson begins.

शय्यासनेऽध्याचरिते श्रेयसा न समाविशेत्।
शय्यासनस्थश्चैवेनं प्रत्युत्थायाभिवादयेत्।। - मनु. २/११६

A student must not sit on a bed or seat that is occupied by someone senior to him in age and knowledge. While sitting on a bed or seat, he should rise and give that seat to one who is senior.

आयुष्मान्भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने।
अकारश्चास्य नाम्नोऽन्ते वाच्य: पूर्वाक्षर: प्लुत:।। - मनु. २/१२५

The elder should say Aayushmaan bhava saumya. Meaning "that may you live long".

Dwij/Rebirth: The first birth is by the mother and the second is from the teacher's womb through education received through Upanayana ceremony, Vedaarambh and Samaavartan or a graduation at the completion of education.

Freedom, its importance: freedom has been stressed that independence brings success while dependence brings misery and difficulty.

Vegetarianism: Manu has considered it criminal to slay and be involved in the process of the animal's death, sale and consumption.

Purity: body can be cleaned by soap and water, mind by truthful behavior, soul by following Dharma, and intellect is cleansed by knowledge.

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मन: सत्येनशुद्ध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति।। - मनु. ५/१०६

The four stages of life:

The role of a householder is the centerpiece of all 4 stages of life and it is the passages through these stages that makes one achieve the highest stage in life, including eternal bliss.

M.D., F.A.C.P., F.A.C.G.
Email: rameshamita@gmail.com

□□□

स्वास्थ्य

करें तनाव का विश्लेषण

आज के समय में कोई व्यक्ति पूर्ण रूप से तनाव मुक्त नहीं हो सकता। इसलिए यह निश्चित है कि आप भी किसी न किसी प्रकार के तनाव से अवश्य ही ग्रसित होंगे। इसकी जाँच आपको स्वयं तथा स्वयं के लिए करनी है। इसलिए यह जाँच निष्पक्ष भाव से ही करें। इस बारे में जब आप स्वयं किसी को नहीं बताते हैं तब तक इस बात का पता किसी को नहीं लगेगा। इसलिए खुले दिल से स्वयं का मूल्यांकन करें। विभिन्न स्थितियों में आपके तनाव की क्या स्थिति है, यह जान लेने के बाद ही इससे मुक्ति के उपाय आसान हो जायेंगे।

तनाव का विश्लेषण करें और सोचें कि भला इस विषय में मैं इतना चिन्तित व तनावग्रस्त क्यों हूँ? क्या मैं व्यावहारिक रूप से सम्बन्धित कार्य या समस्या को सुलझाने का कोई काम या कोशिश कर रहा हूँ? या फिर बस यूँ ही दुःखी हो रहा हूँ। यदि मैं कोई कोशिश कर रहा हूँ तो वह कोशिश योजनाबद्ध है या नहीं? मैं उस समस्या से बचने की कोशिश में लगा हूँ या उससे उभरने की कोशिश में लगा हूँ? इतना सब सोचकर यह भी सोचें कि क्या कारण है कि यह काम या स्थिति मुझे बोझ लग रही है। फिर उन कारणों को भी लिखें जिसके कारण आप स्वयं को अनुकूल नहीं बना पा रहे हैं और तनाव बढ़ा रहे हैं। जो भी कारण सामने निकलकर आयें उन पर गंभीरता से निष्पक्षता से सोचें कि उसका जिम्मेदार कौन है? आप स्वयं या फिर कोई दूसरा। यदि आपके तनाव का कारण कोई दूसरा है तो आशावादी दृष्टिकोण रखते हुए उसे समझायें, बात करें और हल निकालने की कोशिश करें। परन्तु यदि यह संभव नहीं है तो स्वयं को रूपान्तरित करें और इस प्रकार ढालें कि परिस्थिति एवं सामने वाले का आप पर कोई प्रभाव न पड़े और धैर्य एवं कोशिश के साथ आप इस सकारात्मक सोच से कार्य करें। सोचें कि अपने तनाव को कम कर सकते हैं और अपने हिस्से का सुख जुटा सकते हैं। तनाव के विश्लेषण और स्वयं के निरीक्षण के बाद आपको अपने में या अपनी योजनाओं में जो कमी नजर आई है उन्हें प्राथमिकता अनुसार एक-एक करके पूरा करें। हाथ में ली गई किसी भी समस्या को बीच अधर में न छोड़ें क्योंकि बीच में छोड़ा गया कोई भी कार्य हमें हमारे अगले कार्य को पूरा करने में तंग करता है और हमारे अन्दर एक नकारात्मक विचार घर करने लगता है कि 'मुझसे नहीं होगा या मैं नहीं कर सकता' और फिर हम तनाव से भर जाते हैं। इस तरह से तनाव को समझकर उसका विश्लेषण कर आप अपने तनाव को कम कर सकते हैं।

❑❑❑

- शशिकान्त सदैव, साभार- साधना पत्र

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सोत्साह मनाया गया

नवलखा महल, उदयपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः ११ से सायं ४ बजे तक नवलखा महल स्थित माता लीलावन्ती सभागार में कार्यक्रम रखा गया। श्रीमती ब्रजलता मल्टीमीडिया सेण्टर के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधारित, 'विचार टेलीविजन' के द्वारा निर्मित फिल्म 'आह्रान' का फिल्मांकन किया गया तथा इस फिल्म पर आधारित प्रश्नावली के माध्यम से एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता को कनिष्ठ तथा वरिष्ठ वर्ग में बाँटा गया था। डॉ. अमृतलाल तापड़िया जी के संयोजकत्व में इस प्रतियोगिता में ७० लोगों ने भाग लिया। वरिष्ठ वर्ग में डॉ. नरेंद्र सनाढ्य, श्री प्रमोद उज्ज्वल ने संयुक्त रूप से प्रथम, श्री इन्द्रप्रकाश यादव ने द्वितीय तथा डॉ. प्रिया अग्रवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर वैदिक हाउजी का भी आयोजन किया गया। श्रीमती आभा आर्या, शीतल गुप्ता, इन्द्रप्रकाश यादव, हेमा आर्या, अनुष्का मित्तल, श्रीमती शीतल गुप्ता एवं पूर्वी मित्तल वैदिक हाउजी के विजेता रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री नारायण मित्तल ने किया।

शिक्षामंत्री श्री वासुदेव देवनानी ने इस अवसर पर पधारकर नवलखा महल द्वारा प्रवर्तित सभी प्रकल्पों की जानकारी ली एवं बच्चों तथा युवाओं के लिए विभिन्न माध्यमों से किये जा रहे सांस्कृतिक उन्नयन के कार्यों की प्रशंसा की व देश के उन्नयन में स्वामी श्रद्धानन्द जी के अवदान को सराहा।

- नवनीत आर्य, न्यास पुरोहित

सत्यार्थ प्रकाश भवन (नवलखा महल) : एक परिचय

कभी यह महल महाराणा सज्जनसिंह, मेवाड़ के तत्कालीन शासक का मुख्य राजकीय अतिथिगृह था। इस सुन्दर तथा नयनाभिराम प्रासाद में ही महाराणा सज्जन सिंह जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को ठहराया था। कालान्तर में उपेक्षित पड़े इस भवन का मुख्य द्वार जीर्ण-शीर्ण होकर बरसात में गिर गया। न्यास ने नवलखा महल की ही वास्तुशैली के अनुरूप मनोहारी छतरी सहित मुख्य द्वार का निर्माण कराया।

महर्षि जी की यात्राएँ

महर्षि दयानन्द ने मथुरा पहुँचने से पूर्व ज्ञानार्जन हेतु सच्चे गुरुवर्य की व योगियों की तलाश में व तत्पश्चात् गुरुवर विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर वेदज्ञान की कुंजी प्राप्त कर, जन-जन को सत्य के आलोक से आलोकित कर उन्हें अज्ञानान्धकार से छुड़ाने का व्रत लेकर नाना प्रकार के घोरतम कष्ट सहन करके भी अहर्निश यात्राएँ की थीं। यातायात के साधनों की अत्यल्पता के बावजूद भी हजारों किलोमीटर की ये यात्राएँ महर्षि के सत्य व मानवता के प्रति समर्पण की परिचायक हैं, जिन्हें मानचित्र के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

सत्यार्थ प्रकाश भवन का भीतरी प्रासाद

मुख्य द्वार की तरह अन्दर भी सभी जगह जीर्ण-शीर्ण हो जाने के कारण भवन की स्थिति दयनीय थी। न्यास ने लाखों रुपयों की लागत से उसका जीर्णोद्धार किया। आज यह सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल अपनी नई सजधज, सुन्दर लॉन के साथ पर्यटकों का मन मोह लेता है।

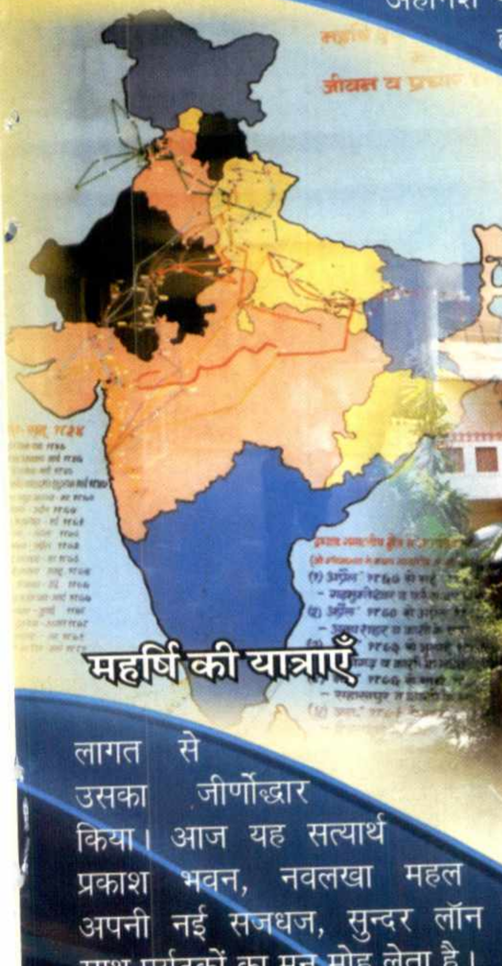

अतिथि विश्राम गृह

इस ऐतिहासिक व पावन स्थल के दर्शनार्थ सैंकड़ों आर्यजन विशिष्ठ अतिथिगण आते हैं। उनकी सुविधा के लिए कुछ वातानुकूलित कमरे व प्रसाधन निर्मित करवाए गए हैं।

वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र

नवलखा महल में प्रतिदिन पधारने वाले सैंकड़ों पर्यटकों को प्रेरणा मिल सके इस हेतु आर्ष साहित्य विक्रय केन्द्र की स्थापना की गई है जहाँ से जिज्ञासुजनों को वैदिक एवं आध्यात्मिक, राष्ट्रीय, सामाजिक व पारिवारिक जीवन को ऊर्ध्व दिशा में ले जाने वाला साहित्य व सुन्दर भजनों के वीसीडी/डीवीडी प्राप्त हो सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

अन्दर का मुख्य चौक-संगीतमय फव्वारे

भवन के अन्दरूनी चौक में कभी साढ़े छह मास तक नित्य महर्षि दयानन्द जी की ओजस्वी वाणी व उससे निःसृत वेद सरणि प्रवाहित हुई थी, जिसमें महाराणा सज्जन सिंह जी व मेवाड़ के अन्य गणमान्य नागरिकों ने प्रतिदिन स्नान कर स्वयं को धन्य किया था। इसी स्मृति को अक्षुण्ण बनाने के लिए महर्षि महिमा के गीत यहाँ गूँजते रहें, इस भावना से आर्य संगीत फव्वारे जो कि ऋषि महिमा के गीतों की धुनों पर रंगीन आभा बिखेरते हुए थिरकते हैं, निर्मित कराए गए हैं। तीन ओर की दीवारों पर महाराणा सज्जन सिंह जी व अन्य स्वतंत्रता के वीर पुजारियों व महापुरुषों के चित्र दर्शाए गए हैं, जो रात्रि में विशेष विद्युत व्यवस्था में मन को मोह लेते हैं।

यज्ञशाला वैदिक संस्कृति में यज्ञ व यज्ञशाला का केन्द्रीय स्थान है। लता गुल्मों से घिरी इस मनोहारी यज्ञशाला व यज्ञवेदी का निर्माण आर्य विद्वानों की देखरेख में पूर्ण विधि विधान के अनुसार किया गया है। यज्ञशाला के प्रांगण में ५०० व्यक्ति बैठ सकते हैं। चारों तरफ यज्ञ महिमा पर वेद मंत्र व इनके अर्थ अंकित हैं। यहाँ प्रातः सायं अग्निहोत्र व वर्ष में विशेष अवसरों पर विशेष यज्ञों व वेदकथा का आयोजन किया जाता है।

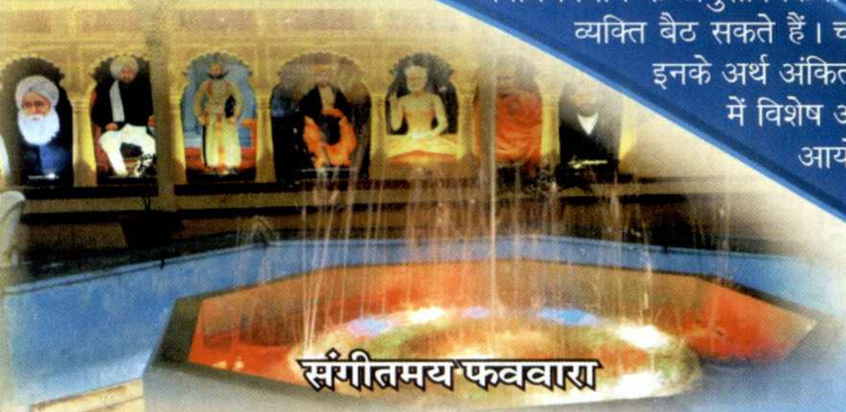

साधना कुटीर

सर्वविदित है कि महर्षि की स्मृति में नवलखा महल को

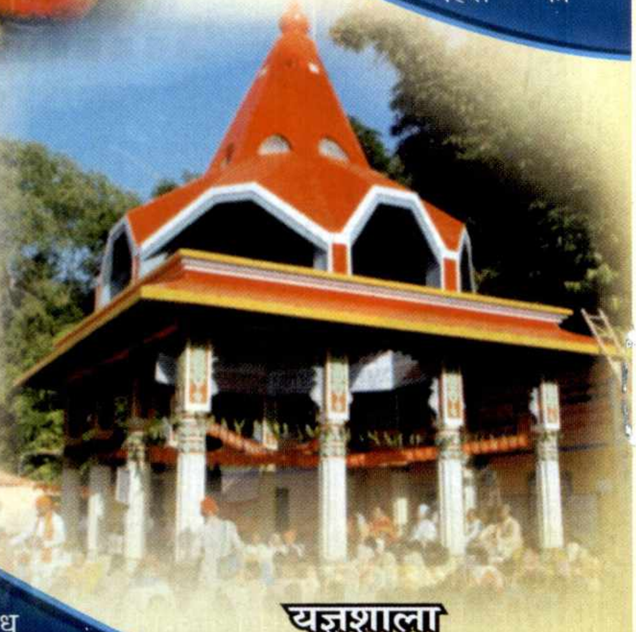

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का स्मारक बनाने व वैदिक विचारधारा को दिग्दिगन्त में प्रसारित करने का संकल्प ले न्यास अध्यक्ष श्री हनुमान प्रसाद चौधरी ने अपना कार्य व्यापार बन्द कर, सम्पूर्ण समय न्यास को देने हेतु संन्यासाश्रम में प्रवेश कर अपना रिहायशी बंगला भी बेच दिया। वह सर्वमेध यज्ञकर्त्ता तत्वबोध सरस्वती के रूप में इसी नवलखा महल में साधना कुटीर बनाकर अपने संकल्प की पूर्ति हेतु साधनारत् रहे तथा २३ जुलाई २००४ को इस नश्वर संसार से विदा हो गए।

आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा

नवलखा महल के दर्शनार्थ अब सहस्रों दर्शकों के साथ- साथ छात्र-छात्राएँ भी पर्याप्त संख्या में आने लगे हैं। इसी स्थल पर एक भव्य 'आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा' को विकसित किया गया है। मानव सृष्टि के आरम्भ से अब

तक उत्पन्न महान् ऋषियों, महापुरुषों के एवं महर्षि दयानन्द के जन्म से निर्वाण तक की प्रमुख घटनाओं को दिग्दर्शित करते आकर्षक तैलीय चित्र हिन्दी व अंग्रेजी में इनके विवरण के साथ दर्शाये गए हैं। चित्रदीर्घा में ही घूमती हुई रेक पर २४ भाषाओं में उपलब्ध सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को प्रदर्शित किया गया है। सम्पूर्ण विश्व में सत्य के अर्थ का प्रकाश करने वाले सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को जहाँ सम्पूर्ण किया गया, उस पावन कक्ष के महत्व को चिरस्मरणीय बनाने हेतु एक चौदह खण्डीय, सेन्सर से घूमता हुआ काँच का सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ स्थापित किया गया है, जिस पर सत्यार्थ प्रकाश की मुख्य शिक्षाओं का अंकन किया गया है।

वैदिक पुस्तकालय व वाचनालय

भवन के प्रथम तल पर कैप्टन देवरत्न आर्य पुस्तकालय स्थापित किया गया है। इसमें लगभग सोलह हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं जो स्वाध्याय के अतिरिक्त वैदिक शोधकर्ताओं हेतु अत्यन्त उपयोगी हैं। यहाँ वैदिक जगत् की प्रमुख पत्रिकाएँ भी वाचनालय में अध्ययन हेतु रखी गई हैं।

सत्यार्थ सौरभ- न्यास द्वारा सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाओं पर आधारित बहुप्रशंसित मासिक पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' प्रकाशित की जाती है जिसमें पूरे परिवार के सभी आयु वर्ग के सदस्यों हेतु उपयोगी सामग्री प्रकाशित होती है यह www.satyarthprakashnyas.org पर भी देश-विदेश में पढ़ी जाती है।

माता लीलावन्ती सभागार

न्यास के पार्श्व भाग में वातानुकूलित भव्य 'माता लीलावन्ती सभागार' निर्मित किया गया है। इसमें दृश्य श्रव्य माध्यम से ऋषि जीवनी दर्शकों को दिखायी जाती है। इस सभागार में मासिक सत्संग, वैदिक कार्यशालाएँ, विचार गोष्ठियाँ, संस्कार शिविर एवं अन्य विभिन्न आयोजन होते रहते हैं। इसके समीप ही एक अन्य अतिथि कक्ष भी निर्मित किया गया है।

आर्यावर्त चित्रदीर्घा

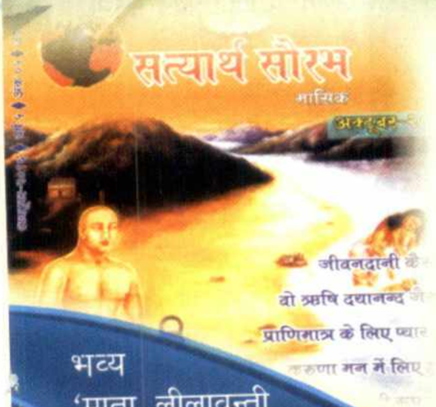

सत्यार्थप्रकाश स्तम्भ

माता लीलावन्ती सभागार

श्रीमती ब्रजलता मल्टीमीडिया सेण्टर

महापुरुषों के जीवन पर आधारित लघु फिल्में/वृतचित्र पिक्चर हॉल जैसे अनुभव के साथ दिखायी जाती हैं ताकि उदात्त शिक्षाओं को आज का युवावर्ग अपने जीवन में स्थान देवे। इसी उद्देश्य से उक्त प्रकल्प की स्थापना की गई है, जो अत्यन्त सफलतापूर्वक आगन्तुकों को प्रेरणा दे रहा है।

☆☆☆

हनुमान वेद के विद्वान् थे

श्री राम हनुमान का हृदय से सम्मान करते थे। जब श्री राम को वनवास हो गया तो उसी समय उनकी प्रिय सीता का हरण हो गया था जिन्हें खोज करते हुए राम व लक्ष्मण किष्किन्धा की सीमा पर पहुँचे तब वहाँ के राजा सुग्रीव थे उन्होंने मंत्री हनुमान को उन दोनों का परिचय लेने हेतु भेजा। हनुमान जी ने वहाँ जाकर देखा तो कहने लगे आपने यज्ञोपवीत धारण किया हुआ है, पीतवस्त्र धारण किए हैं। लगता है आप ब्राह्मण (साधु) हैं परन्तु मैं भ्रमित हूँ क्योंकि आपने कन्धे पर धनुष बाण धारण किया है इससे प्रतीत होता है कि आप क्षत्रिय हैं कृपा कर अपना परिचय देवें।

इस पर श्री राम ने नम्रतापूर्वक निवेदन किया कि- 'हम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र हैं, हमें वनवास मिला है और मेरी प्रिय सीता का अपहरण हो गया है'... जब श्री राम ने हनुमान से अपनी समस्या बता दी तो हनुमान परिचय जानने हेतु लक्ष्मण की ओर दृष्टि करने लगे तब इस स्थिति को श्री राम समझ गए और लक्ष्मण की ओर देख कर बोले-

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदविदुषः शक्यमेवं प्रभाषितुम्।। - किष्कि. का. २/२८

अर्थात् हे लक्ष्मण! ये हनुमान उच्चकोटि के विद्वान् हैं, क्योंकि ऋग्वेद के अध्ययन से अनभिज्ञ, यजुर्वेद के ज्ञान से हीन और सामवेद के बोध से शून्य व्यक्ति ऐसी परिष्कृत बातें नहीं कह सकता।

यहाँ स्पष्ट है कि हनुमान उच्च कोटि के विद्वान् थे। वेदों के ज्ञाता थे। व्याकरण अच्छा था, भाषा नियमित थी व ऊँचा बोलते थे न कि तर्कहीन। अतः ऐसा व्यक्ति कितना महान् होगा ऐसा हम विचार ही कर सकते हैं।

आज लोगों में भ्रान्ति है कि हनुमान बंदर थे। यह एकदम असत्य है, क्योंकि बन्दर कभी शब्दों का उच्चारण कर ही नहीं सकता। हनुमान जी विशुद्ध संस्कृत भाषा व व्याकरण का प्रयोग करते थे वह मनुष्य ही थे क्योंकि उनकी माता अंजना व पिता पवन मनुष्य थे और मनुष्यों के यहाँ बन्दर जन्म नहीं लेते यह सृष्टि का नियम है।

हनुमान के बन्दर की भाँति पूँछ भी नहीं थी। यह हनुमान के साथ ही नहीं अन्य ऋषि मुनियों के साथ भी अन्याय किया गया है। उन्हें मछली, छिपकली मकड़ी आदि से उत्पन्न (पुराणों में) बताया गया है। प्रक्षिप्त विषयों से अलग हटकर इन ग्रन्थों, इतिहास पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।

हनुमान के पूँछ न होकर हो सकता है वानर जाति अपना राष्ट्रीय ध्वज विशेष रूप से बना, पीछे-पीछे इसलिए बाँध लेते हों जिससे कार्य करने, युद्ध आदि में हाथ खाली रहे अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग कर सकें।

"आञ्जनेय सुत पवनपुत्र, हनुमान नरश्रेष्ठ थे,
अरण्य सुसंस्कृति के पोषक, ब्रह्मचारी वीर थे।"

- डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह
चन्द्र लोक कॉलोनी, खुर्जा- २०३१३१

समाचार

आर्य समाज मंदिर, बीकानेर के पुनर्निर्माण का हुआ शिलान्यास

इस अवसर पर आयोजित समारोह में नगर निगम, बीकानेर के महापौर श्री नारायण जी चौपड़ा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आर्य समाज का यह भवन तैयार हो जाने पर यहाँ केवल वैदिक सभ्यता संस्कृति का ही प्रचार व प्रसार नहीं होगा अपितु यह सामाजिक कुरीतियों और बुराईयों को दूर करने का प्रमुख केन्द्र बनेगा। प्रधान महेश सोनी ने बताया कि पुराना भवन आज से सौ साल पहले दिनांक ०२.१०.१६१७ को जमीन क्रय करके बनाया गया था। कार्यक्रम की शुरूआत में श्री कपिल आर्ष गुरुकुल, श्री कोलायत के आचार्य श्री शिव कुमार जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। - **महेश सोनी, प्रधान, बीकानेर**

आर्य समाज पटियाला में चतुर्वेदशतक पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर चौक आर्य समाज, पटियाला द्वारा दिनांक ६ नवम्बर से १३ नवम्बर २०१६ (रविवार) तक बड़ी धूम धाम और हर्षोल्लास के साथ वेद प्रचार सप्ताह एवं चतुर्वेदशतक पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर आचार्य श्री वीरेन्द्र रत्नम जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से भजनोपदेशक पं. जगत वर्मा जी विशेष रूप से आमंत्रित थे। आर्य समाज मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार भव्य बनाने के लिये आर्य समाज के उप प्रधान कर्नल आनन्द मोहन सेठी जी और उनके सुपुत्रों ने सवा लाख रुपये दान दिया। ये बधाई के पात्र हैं। - **वेदप्रकाश तुली, मंत्री, पटियाला**

आर्य समाज व स्त्री आर्य समाज श्रीगंगानगर में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग एवं आर्य स्त्री समाज श्री गंगानगर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ के अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध वरेण्य विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री {सेवानिवृत अध्यक्ष संस्कृत विभाग स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी (उ.प्र.)} तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक भानु प्रकाश बरेली (उ.प्र.) के संगीतमय उद्‌बोधन ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। यजुर्वेद पारायण यज्ञ की ब्रह्मा डॉ. प्रियम्वदा {प्राचार्य गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबावाद (उ.प्र.)} थीं। कार्यक्रम अत्यधिक सफल रहा।

- **आर्य समाज, श्रीगंगानगर**

आर्य समाज सैक्टर २२-ए चण्डीगढ़ में सामवेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज सैक्टर २२-ए चण्डीगढ़ में विगत् ०५.०६.२०१६ सोमवार से ११.०६.२०१६ रविवार तक सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन डा. सोमदेव शास्त्री जी मुम्बई के ब्रह्मत्व में हुआ। आर्ष शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसके अध्यक्ष पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी रहे।

इस समारोह में आर्ष गुरुकुल की स्थापना की घोषणा की गई जिसका सभी आर्य महानुभावों ने मुक्त कण्ठ से समर्थन किया। मंच का संचालन श्री सोमदत्त शास्त्री प्रधान आर्य समाज सैक्टर २२-ए चण्डीगढ़ ने बड़ी कुशलता से किया। समाज के सभी सदस्य गण भी बहुत सक्रिय रहे। - **आर्य समाज, चण्डीगढ़**

आर्य समाज गांधीधाम में ६३वाँ वार्षिक अधिवेशन

दिसम्बर १६-१७-१८ (शुक्र, शनि, रवि) २०१६ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में विविध सम्मेलन, गोष्ठियाँ, पुरस्कार वितरण तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल थे। प्रातःकाल आध्यात्मिकता से परिपूर्ण यज्ञ होता था। इस बार यह कार्यक्रम आर्य समाज गांधीधाम द्वारा संचालित दयानन्द आर्य वैदिक पब्लिक स्कूल के प्रांगण में हुआ।

- **वाचोनिधि आर्य, प्रधान**

सुशील प्रेमजी को मातृशोक

आर्यसमाज शिकागोलेंड के सक्रिय सहयोगी एवं सदस्य श्री सुशील प्रेम जी की माताजी का निधन, जब वे अपनी सुपुत्री के पास कलकत्ता आयीं हुयीं थीं, हो गया। पूज्या माताजी को न्यास से अत्यधिक लगाव था। वे एकाधिक अवसर पर उदयपुर न्यास के संरक्षक डॉ. सुखदेव जी सोनी व अपनी पुत्रियों के साथ उदयपुर पधारीं थीं। उनका वात्सल्य हमें प्राप्त हुआ जो अब हमारी थाती ही बन कर रह गया है। न्यास को भी माताजी का अत्यन्त उदार सहयोग प्राप्त होता रहता था। हमारे निकट अत्यन्त पीड़ा का विषय है कि माताजी अब हम सबकी स्मृतियों में ही शेष रह गयीं हैं। वे हमें सदैव याद आती रहेंगीं। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि भाई सुशील जी व उनके शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करें तथा दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान देने की कृपा करें। - **अशोक आर्य**

पुस्तक समीक्षा 'यज्ञ क्या, क्यों और कैसे'
लेखिका- 'सत्यार्थदूत' श्रीमती सरोज आर्या

उक्त पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ने के पश्चात् मेरा मत है कि यज्ञ विषय पर मैंने पूर्व में इससे अधिक श्रेष्ठ पुस्तक नहीं देखी है। लेखिका इसमें 'गागर में सागर' भर देने वाली कहावत को प्रत्यक्ष करके दिखा दिया है। मैंने लेखिका द्वारा सत्यार्थप्रकाश पर लिखे गए लेखों को भी देखा है। सत्यार्थप्रकाश पर तो उनका आधिपत्य जैसा अनुभव किया था परन्तु उक्त विषय पर इनका इतना गंभीर अध्ययन है इसकी कल्पना भी नहीं की थी। लेखिका ने इस पुस्तक में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मनुस्मृति, तैत्तिरीय ब्राह्मण, ताण्ड्य ब्राह्मण, गोपथ ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, मैत्रायणी उपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्, गोभिल गृह्य सूत्र, देवयान गृह्य परिभाष सूत्र, महाभारत, संस्कारविधि, सत्यार्थप्रकाश, उपदेश मंजरी, आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि अनेक आर्ष ग्रन्थों को दुह कर उनका श्रेष्ठतम भाग इस ग्रन्थ रत्न में भर दिया है। इतना ही नहीं प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की सम्मति भी इसमें उपयोग की गई है।

वास्तव में यह पुस्तक तो यज्ञ विषयक ज्ञान का खजाना बन गई है। श्री मदन मोहन जावलिया जी जैसे नीति निपुण सम्पादक की आभा भी प्रकाशित हो रही है। वाह! सोने में सुगन्ध आ गई। मैं इस पुस्तक के प्रकाशन पर लेखिका को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा करता हूँ कि आर्य विद्वानगण इस पुस्तक का लाभ लेंगे। सधन्यवाद

- **शिवनारायण उपाध्याय, कोटा**

www.thearyasamaj.org

हलचल

महिला हिंसा उन्मूलन विषयक संगोष्ठी- स्त्री पुरुष की सहधर्मी है, प्रतिद्वंदी नहीं

स्त्री पुरुष की सहधर्मी है, प्रतिद्वंदी नहीं। महिला को पुरुष से समानता चाहिए, मुकाबला नहीं। यह विचार आर्य समाज, हिरण मगरी में आयोजित 'महिला हिंसा उन्मूलन विषयक संगोष्ठी' में वक्ताओं ने

व्यक्त किए। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि वक्ता राजस्थान साहित्य अकादमी की पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर अजित गुप्ता ने कहा कि महिला ही पुरुष को आकाश में उड़ने का समय-अवसर प्रदान करती है। महिला गृहस्थी की जिम्मेदारी उठाकर पुरुष को उन्नति करने में सहयोग करती है। डॉक्टर अजित गुप्ता ने बताया कि २०११ की जनगणना के आधार पर भारत में महिलाओं की संख्या पुरुषों से ४ करोड़ कम है। लिंगानुपात में इस अन्तर के कारण पुरुषों में दुराचार व हिंसा की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है।

कार्यक्रम की अध्यक्ष डी. ए. वी. स्कूल की प्राचार्या श्रीमती नीता गर्ग ने कहा कि महिला ही महिला का शोषण करने की जिम्मेदार है। समाज में बदलाव की शुरुआत घर से ही करें। बेटा-बेटी में फर्क ना समझें। भले ही वह खान-पान हो या शिक्षा-दीक्षा।

श्री शंकर लाल विद्यावाचस्पति जी ने बच्चों को संस्कारित करने पर जोर दिया। वैदिक संस्कृति के अनुसार व्यक्ति के जीवन में सोलह संस्कार होते हैं, जिसमें से तीन संस्कार जन्म से पूर्व होते हैं। यदि पुनः इन संस्कारों को अपनाया जाए तो समाज में सदाचार बढ़ेगा व महिलाओं पर अत्याचार कम होगा।

श्रीमती राजेश्वरी श्रीवास्तव, पीयूष रानी राठौड, भँवर लाल आर्य, डॉक्टर कोकिला गोयल एवं मंजू पाण्डे ने भी इस विषय पर विचार व्यक्त किए। संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने, स्वागत श्रीमती ललिता मेहरा ने व धन्यवाद श्रीमती शारदा गुप्ता ने किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में पंडित राम दयाल जी के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसके मुख्य यजमान श्रीमती नूतन चौहान व चम्पा देवी थीं।

- ललिता मेहरा, मंत्री, आर्य समाज हिरन मगरी, उदयपुर

वैदिक ज्ञान-विज्ञान संस्थान आगरा के तत्वावधान में 'वैदिक पंच महायज्ञ विधि' पुस्तक का विमोचन

प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं वैदिक ज्ञान-विज्ञान के प्रचार प्रसार में संलग्न महान् संस्था 'वैदिक ज्ञान-विज्ञान संस्थान' आगरा के तत्वावधान में यज्ञ के विधि की पुस्तक 'वैदिक पंच महायज्ञ विधि' का विमोचन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस ग्रन्थ का लेखन यशस्वी वैदिक विचारक आचार्य विश्वेन्द्रार्यः शास्त्री ने बड़े ही मनोयोग और उत्तमता से किया है।

- प्रेषक- प्रमोद जिन्दल, आगरा

प्रतिस्वर

श्रद्धेय अशोक जी आर्य नमस्ते,

आपके द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका सत्यार्थ-सौरभ का नवम्बर २०१६ का अंक पढ़ने का सुअवसर मिला। इसमें 'नारी यदि देवी है तो उसके साथ हिंसा क्यों' निबन्ध पढ़ कर जाना कि महिला दिवस २५ नवम्बर को क्यों मनाया जाता है। यह दिन मिराबेल बहिनों के बलिदान की याद में महिला दिवस के रुप में समर्पित है। 'आन्तरिक पीड़ा से मुक्ति का मार्ग अक्षम्य को क्षमा है।' अच्छा निबन्ध है। 'स्त्री शिक्षा और दयानन्द ' लेख से पता चलता है कि दयानन्द ही स्त्री शिक्षा के प्रथम पुरोधा थे। उन्होंने प्राणी मात्र में मनुष्य को श्रेष्ठ मानते हुए स्त्री-पुरुष के पढ़ने के अधिकार की सप्रमाण पुष्टि की।

संत कबीर भी गो भक्त थे, उन्होंने गाय की रक्षा के लिए कैसे विवाह की शर्त रखी, यह भी ज्ञात हुआ।

कर्त्तव्य परायणता की प्रतिमूर्ति महात्मा हंसराज जी ने सारा जीवन डी.ए.वी. संस्था के लिए देकर उस संस्था को रोप कर, वट वृक्ष के रूप में खड़ा किया, जो आज लाखों छात्रों के भविष्य को निर्धारण करके राष्ट्र को प्रतिभाशाली व्यक्तित्व दे रही है। 'दूषित और विकृत इतिहास' निबन्ध में कुछ ऐतिहासिक भूलों पर प्रकाश डाला गया है। 'हौसलों के सामने अपंगता भी पंगु हुई' निबन्ध भी विशेष प्रेरणादायक है। यह पत्रिका दिन दोगुनी रात चौगुनी उन्नति करती रहे। सधन्यवाद!- डॉ. रामपाल सिंह, भिवानी

आर्य समाज भीमगंजमण्डी, कोटा, राजस्थान का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज भीमगंजमण्डी, कोटा, राजस्थान का वार्षिकोत्सव (१२-१३-१४ नवम्बर २०१६) को मनाया गया। आर्य जगत् के प्रख्यात वेद विद्वान् आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ; वैदिक प्रवक्ता, आगरा के प्रेरक उद्‌बोधन एवं प्रख्यात् भजनोपदेशक पंडित प्रदीप शास्त्री; फरीदाबाद, हरियाणा के विद्वतापूर्ण भजनोपदेश हुए।

- प्रेमनाथ कौशल, प्रधान

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ११/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११/१६** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री नन्द किशोर प्रसाद; खरसाँवा (झारखंड), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), श्री रमेश आर्य; दीनानगर (पंजाब), श्री मुकेश पाठक; उदयपुर (राज.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (राज.), मीना वासुदेव भाई ठककर; साबरकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठककर; साबरकांठा (गुजरात), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरि.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजयनगर (राज.), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); बनासकांठा (गुजरात), श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती परजीत कौर; नई दिल्ली, श्री पृथ्वीवल्लभ देव सोलंकी; उज्जैन (म.प्र.), श्री रामप्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ.प्र.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री सुबोधकुमार (सुबोधमुनि); ज्वालापुर (उत्तराखण्ड)। **सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।**

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १६ पर अवश्य पढ़ें।

www.thearyasamaj.org

संघर्ष के बीज

कथा सरित

किसी गाँव में एक धर्मपरायण किसान रहा करता था। उसकी फसल अक्सर खराब हो जाया करती थी। कभी बाढ़ आ जाया करती थी तो कभी सूखे की वजह से उसकी फसल बर्बाद हो जाया करती। कभी गर्मी बेहद होती तो कभी ठण्ड इतनी होती कि वो बेचारा कभी भी अपनी फसल को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर पाया।

एक दिन किसान दुःखी होकर मंदिर में जा पहुँचा और भगवान की मूर्त्ति के आगे खड़ा हो कर कहने लगा भगवान बेशक आप परमात्मा हैं लेकिन फिर भी लगता है आपको खेती बाड़ी की जरा भी जानकारी नहीं है। कृपया करके एक बार बस मेरे अनुसार मौसम को होने दीजिये फिर देखिये मैं कैसे अपने अन्न के भंडार को भरता हूँ। इस पर आकाशवाणी हुई कि 'तथास्तु वत्स! जैसे तुम चाहोगे आज के बाद वैसा ही मौसम हो जाया करेगा और ये साल मेने तुमको दिया।' किसान बड़ा खुशी खुशी घर आया।

क्या होता है कि उस बरस भगवान ने कुछ भी अपने अनुसार नहीं किया और किसान जब चाहता धूप खिल जाया करती और जब वो चाहता तो बारिश हो जाती लेकिन किसान ने कभी भी तूफान को और अंधड़ को नहीं आने दिया। बड़ी अच्छी फसल हुई। पौधे बड़े लहलहा रहे थे। समय के साथ-साथ फसल भी बढ़ी और किसान की खुशी भी ।

आखिर फसल काटने का समय आ गया किसान बड़ी खुशी से खेतों की ओर गया और फसल को काटने के लिए जैसे ही खेत में घुसा बड़ा हैरान हुआ और उसकी खुशी भी काफूर हो गयी क्योंकि उसने देखा कि गेंहूँ की बालियों में एक भी बीज नहीं था। उसका दिल धक्क से रह गया। किसान दुःखी होकर परमात्मा से कहने लगा 'हे भगवन् ये क्या?'

तब आकाशवाणी हुए कि 'ये तो होना ही था वत्स, तुमने जरा भी तूफान, आँधी, ओलों को नहीं आने दिया जबकि यही वो मुश्किलें हैं जो किसी बीज को शक्ति देती हैं और वो तमाम मुश्किलों के बीच भी अपना संघर्ष जारी रखते हुए बढ़ता है और अपने जैसे हजारों बीजों को पैदा करता है, जबकि तुमने ये मुश्किलें ही नहीं आने दीं तो कैसे बढ़ता ये बताओ तुम?' भगवान ने कहा बिना किसी चुनौतियों के बढ़ते हुए ये पौधे अन्दर से खोखले रह गये। यही होना था।

यह सुनकर किसान को अपनी भूल का अहसास हुआ। जिन्दगी में जब तक बाधाएँ नहीं आतीं तब तक मनुष्य को खुद की काबिलियत का भी अंदाजा नहीं होता कि वो कितना बेहतर कर सकता है जबकि अगर बाधाओं से पार जाने के लिए वो अपनी जी जान लगा दे तो मंजिल कहीं अधिक दूर नहीं होती ।

❑❑❑

साभार- हितोपदेश

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थ-पीयूष व्यसन-रहित हो राष्ट्र

महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज के नवें व दसवें नियम द्रष्टव्य हैं-

नवा नियम- प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

दसवाँ नियम- सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

विश्व में कृषक तथा मजदूर वर्ग के लिए बहुत कुछ कहा गया है। महर्षि दयानन्द की मान्यता भी द्रष्टव्य है।

राजाओं का राजा किसान- यह बात ठीक है कि राजाओं का राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं और राजा उनका रक्षक है।

राजा

राज्य का प्रमुख राजा होता है। सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्द जी का कथन है- 'और इस पर भी ध्यान रखना चाहिए कि 'यथा राजा तथा प्रजा' जैसे राजा होता है, वैसी ही उसकी 'प्रजा' होती है, इसलिए **राजा और राजपुरुषों को अति उचित है कि कभी दुष्टाचार न करें, किन्तु सब दिन धर्म न्याय से वर्त्तकर सबके सुधार का दृष्टान्त बनें।'** इसलिए उन्होंने राजा को विषयासक्ति और व्यभिचार आदि से दूर रहने का निर्देश देते हुए कहा है- 'जैसा बल और बुद्धि का नाशक-व्यवहार व्यभिचार और अतिविषयासक्ति है, वैसा और कोई नहीं है। विशेषतः क्षत्रियों को दृढ़ांग और बलयुक्त होना चाहिए क्योंकि जब वे ही विषयासक्त होंगे तो राज्यधर्म ही नष्ट हो जायेगा।' 'इसलिए महाराज जी ने मनु जी का उद्धरण देते हुए राजा और उसके सभासदों को काम-क्रोध आदि के कुपरिणामों का दिग्दर्शन कराते हुए उन्हें जितेन्द्रिय होने का आदेश दिया है-

त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं.... स्वर्यात्यव्यसनी मृतः। - मनु. ७/४३-५३

इन पंक्तियों का भाव बताते हुए महर्षि जी यहाँ तक लिखते है कि '**इसमें यह निश्चय हैं कि दुष्ट व्यसन में फँसने से तो मर जाना अच्छा है, क्योंकि जो दुष्टाचारी पुरुष है वह अधिक जियेगा तो अधिक से अधिक पाप करके नीच-नीच गति अर्थात् अधिक से अधिक दुःख को प्राप्त होता जायेगा और जो किसी व्यसन में नहीं फँसा, वह मर भी जायेगा तो भी सुख को प्राप्त होता जायेगा।** इसलिए विशेष **राजा और सब मनुष्यों को उचित है कि कभी मृगया और मद्यपान आदि दुष्ट कामों में न फँसे और दुष्ट व्यसनों से पृथक् होकर धर्मयुक्त गुण-कर्म-स्वभाव में सदा वर्त्तके अच्छे-अच्छे काम किया करें।'**

इन सब लोगों को दस प्रकार के 'कामज' तथा आठ प्रकार के 'क्रोधज' दुष्ट व्यसनों से सदा प्रयत्नपूर्वक बचना ही चाहिये। राजाओं को भी सभासद लोग उन सभी व्यसनों में प्रवृत्त न होने दें अन्यथा सब के सब शरीर से दुर्बल व चरित्र भ्रष्ट होकर नष्ट हो जायेंगे। दस कामज व आठ क्रोधज व्यसनों को महर्षि ने दुष्ट इसलिए कहा है कि यदि उन व्यसनों में से एक भी व्यसन पीछे लग जाये तो शेष समस्त व्यसन लाख प्रयत्न करने पर भी स्वतः आ लगते हैं और सर्वनाश करके ही पीछा छोड़ते हैं। मनुस्मृति के आधार पर उन सभी व्यसनों के विशद् वर्णन से महर्षि का ध्येय उनसे सदा बचे रहने के लिये राज-पुरुषों को सचेत करना ही है।

महर्षि जी के उपरोक्त विवेचन से बहुत-सी बातें साफ हो जाती हैं। राजा को पूर्णतया आध्यात्मिकता से परिपूर्ण होना अपेक्षित है तथा वह धीर, गंभीर और दूसरों को साथ लेकर चलने वाला हो, परोपकारी हो तथा जनता के दुःखों को दूर करने वाला हो। आज की राजनीति यदि दूषित हुई है तो उसका सबसे प्रमुख कारण यही है कि राजा का अपना चरित्र दोषरहित नहीं है। आज भ्रष्टाचार और अनाचार का कारण यही है कि राजा या राष्ट्राध्यक्षों का खान-पान व दिनचर्या तथा आचार-व्यवहार ठीक नहीं है। महर्षि दयानन्द जी महाराज की वेद के ऊपर अत्यधिक आस्था थी अतः उन्होंने वेदों के आधार पर अपनी राजधर्म सम्बन्धी विचारधारा को प्रस्तुत किया है। वेदों में राजा के चरित्र के बारे में विस्तार से चर्चा हुई है। महर्षि जी के उपरोक्त कथन का आधार भी हमें ऋग्वेद १-७३-३ में, दृष्टिगत् होता है-

देवों न यः पृथिवीं विश्वधाया उपेक्षित हितमित्रो न राजा।
पुरः सदः शर्मसदो न वीरा अनवद्या पतिजुष्टेव नारी।।

अर्थात् हमारा राजा वह होना चाहिए जो अपने चरित्रादि के कारण पृथ्वी में प्रकाशित हो, मित्रवत् हमारा हित चाहने वाला हो, नगर के सदस्यों, राज्यों के वीर पुरुषों और अन्य योग्य प्रतिनिधियों के माध्यम से जो शक्ति प्रयोग करता हो तथा पतिव्रता नारियों तक से परामर्श करने वाला हो।

□□□

सम्पादक- अशोक आर्य

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 January-2017 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

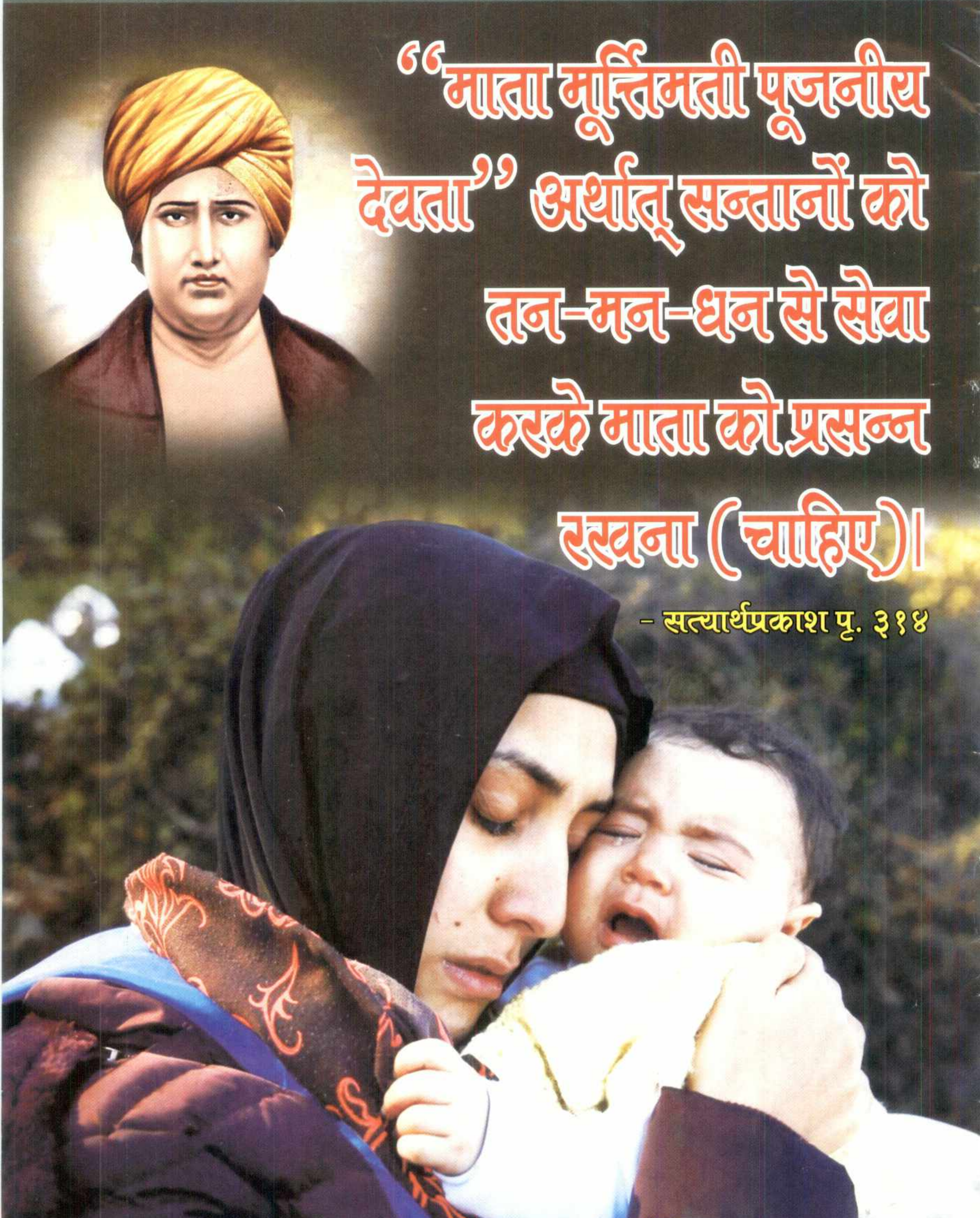

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
COPL-4104
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की 3 तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की 7 तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर